विश्व हिंदी समाचार
Vishwa Hindi Samachaar
विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष: 19 | अंक: 71 | सितंबर, 2025

हिंदी दिवस 2025

हिंदी दिवस 2025 के उपलक्ष्य में विश्व भर में हिंदी की अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस वर्ष विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस सहित भारत, सैन फ़्रांसिस्को, जिबूती, बैंकॉक, न्यूज़ीलैंड, शिकागो, शंघई, दक्षिण अफ़्रीका, सूरीनाम, फ़िजी आदि देशों में हिंदी दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। विश्व भर में हिंदी दिवस की गतिविधियों की रिपोर्ट इस अंक में पढ़ें।

पृ. 4-9

अंतरराष्ट्रीय कवि-सम्मेलन

23 जुलाई, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय और भारतीय उच्चायोग के तत्त्वावधान में तथा मॉरीशयन सोसाइटी फ़ॉर क्वालिटी सर्कल्स के सहयोग से अंतरराष्ट्रीय कवि-सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें मॉरीशस, भारत, केन्या, श्रीलंका, युएई तथा नेपाल से प्रतिभागिता हुई।

पृ. 2-3

अंतरराष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी : 'पद्म भूषण श्री हरिवंशराय बच्चन की कविताएँ'

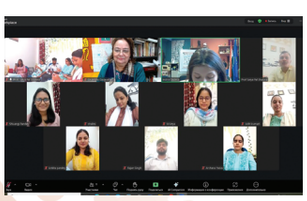

25 सितंबर, 2025 को रूसी राजकीय मानवीकि विश्वविद्यालय, मॉस्को, रूस ने ताशकंद राज्य प्राच्य अध्ययन संस्थान, उज़्बेकिस्तान तथा काशी हिंदू विश्वविद्यालय, बी.एच.यू., वाराणसी, भारत के तत्त्वावधान में 'पद्म भूषण श्री हरिवंशराय बच्चन की कविताएँ' विषय पर अंतरराष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया।

पृ. 9

'मॉरीशस की साहित्यिक सुगंध' का लोकार्पण

31 जुलाई, 2025 को तुलसी जयंती के अवसर पर मॉरीशस स्थित रामायण सेंटर में 'मॉरीशस की साहित्यिक सुगंध' पुस्तक का लोकार्पण संपन्न हुआ। यह पुस्तक मॉरीशस के 40 से अधिक रचनाकारों की 64 रचनाओं का संकलन है, जिसमें कविता, कहानी, लघुकथा, संस्मरण, निबंध, शोध आलेख आदि शामिल हैं।

पृ. 13

सिंगापुर में 'हिंदी उत्कृष्टता सम्मान समारोह'

16 सितंबर, 2025 को हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर ग्लोबल हिंदी फ़ाउंडेशन, सिंगापुर द्वारा आयोजित विशेष कार्यक्रम में हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सिद्ध संगीतकार और फ़िल्म निर्देशक विशाल भारद्वाज एवं उनकी धर्मपत्नी रेखा भारद्वाज को 'हिंदी उत्कृष्टता सम्मान' से सम्मानित किया गया।

पृ. 14

श्रद्धांजलि : डॉ. सीतेश आलोक

16 सितंबर, 2025 को नोएडा में प्रख्यात साहित्यकार डॉ. सीतेश आलोक का स्वर्गवास हो गया। डॉ. सीतेश आलोक गृहस्थ के बाने में तपस्वी जैसा ही जीवन जीते थे। राजनीतिक गलियारों ने उन्हें कभी आकर्षित नहीं किया। वे अलग मिट्टी के बने थे। साहित्य तो उनके रक्त में था।

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि।

पृ. 15

इस अंक में आगे पढ़ें :

- *संगोष्ठी, सम्मेलन, कार्यशाला, जयंती, उत्सव एवं शैक्षणिक गतिविधियाँ* — *पृ. 9-11*
- *आभासी कार्यक्रम* — *पृ. 11-13*
- *साक्षात्कार* — *पृ.13*
- *लोकार्पण* — *पृ. 13-14*
- *सम्मान एवं पुरस्कार* — *पृ. 14-15*
- *श्रद्धांजलि* — *पृ. 15*
- *संपादकीय* — *पृ. 16*

ISSN 1694-2485

अंतरराष्ट्रीय हिंदी कवि-सम्मेलन

23 जुलाई, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय और भारतीय उच्चायोग के तत्त्वावधान में तथा मॉरीशस सोसाइटी फ़ॉर क्वालिटी सर्कल्स के सहयोग से अंतरराष्ट्रीय कवि-सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें मॉरीशस, भारत, केन्या, श्रीलंका, युएई तथा नेपाल से प्रतिभागिता हुई।

प्रथम सत्र में मॉरीशस से श्रीमती कल्पना लालजी, श्री धनराज शंभु, श्रीमती सविता तिवारी, सुश्री आशा जानू तथा प्रो. राज शेखर ने अपनी कविताओं का पाठ किया। श्रीलंका, मॉरीशस तथा भारत के विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। केन्या से श्री अभिजीत गुप्ता ने मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियों का उदाहरण देते हुए काव्य की सार्थकता पर प्रकाश डाला।

द्वितीय सत्र में मॉरीशस से श्रीमती बिद्रुति शंभु, डॉ. शशि दुकन, श्रीमती लक्ष्मी झमन, श्री बिसुनदयाल रामफल, श्री दयानंद चेंगी तथा डॉ. सोमदत्त काशीनाथ ने अपनी कविताएँ सुनाईं। दुबई से श्री रवि शुक्ला ने तथा विभिन्न देशों के विद्यार्थियों ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

तृतीय सत्र की शुरुआत जी.आर.पी.एफ़. पब्लिक स्कूल, रोहिणी, भारत के काशी अहुजा एवं आर्य सिंह की रचना 'मेरा भारत अपना' कविता की प्रस्तुति से हुई।

विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने वरिष्ठ एवं नवोदित कवियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए आशा व्यक्त की कि कविता के माध्यम से हिंदी का वैश्विक प्रसार निरंतर होता रहे।

विशिष्ट अतिथि भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अनुराग श्रीवास्तव ने कहा कि जैसे गंगा नदी अपने

प्रवाह में अनेक नदियों और जल-स्रोतों को समाहित कर समृद्ध होती है, वैसे ही हिंदी भी सभी बोलियों और भाषाओं के अनुभवों को आत्मसात कर समाज में एकता और सहयोग का संदेश देती है। उन्होंने युवाओं से अपील की कि वे हिंदी को साहित्य की भाषा के साथ-साथ तकनीक की भाषा के रूप में अपनाएँ।

मुख्य अतिथि, विदेश मामले, क्षेत्रीय एकीकरण और अंतरराष्ट्रीय व्यापार मंत्री, श्री धनंजय रामफल ने कहा कि यह सम्मेलन शब्दों की शक्ति और कविता की सुंदरता का उदाहरण प्रस्तुत करता है। उन्होंने कामना की कि यह आयोजन युवाओं में हिंदी भाषा के प्रति रुचि जागृत करेगा।

इस अवसर पर श्री बिसुनदयाल रामफल द्वारा लिखित एवं डॉ. सोमदत्त काशीनाथ द्वारा संपादित कविता-संग्रह 'कुंति' का लोकार्पण किया गया। वर्ल्ड काउंसिल फ़ॉर क्वालिटी एंड एक्सेलेंस इन एजुकेशन, भारत की कार्यकारी निदेशिका, डॉ. विनीता कमरन द्वारा मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि को स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

डॉ. विनीता कमरन ने विद्यार्थियों को मेहनत करने और अपना भाग्य स्वयं गढ़ने का संदेश दिया। मॉरीशयन सोसाईटी फ़ॉर क्वालिटी सर्कल्स के अध्यक्ष, श्री मधुकर नारायण, ओ.एस.के. ने विश्व हिंदी सचिवालय के कर्मियों के प्रति आभार प्रकट किया। इसके बाद, गोपिका अकादेमी ऑफ़ पर्फ़ोमिंग आर्ट्स, मॉरीशस से पूसा बिहारी एवं ईश्वरी वीराबात्रन ने गणेश-वंदना प्रस्तुत की। ग्वालियर हाई ग्लोरी स्कूल, ग्वालियर की छात्राओं ने 'हमको मन की शक्ति देना' का गायन किया। इस अवसर पर प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासिचव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने औपचारिक धन्यवाद-ज्ञापन किया। दुबई से पधारे श्री रवि शुक्ल और केन्या से आए श्री अभिजीत गुप्ता ने कार्यक्रम का संचालन किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

हिंदी दिवस 2025

हिंदी दिवस 2025 के संदर्भ में विश्व हिंदी सचिवालय ने उगना नाट्य मंडली, सिंगापुर, वाक्वा रंग भूमि कला मंदिर, मॉरीशस एवं हिंदी स्कूल फ़ेडरेशन, मॉरीशस के सहयोग से 15-19 सितंबर, 2025 तक 'हिंदी नाटक : अभिनय एवं मंचन' विषय पर एक सप्ताह की कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला का संचालन, कला एवं संस्कृति मंत्रालय, मॉरीशस के सेवानिवृत्त कला अधिकारी एवं विशेषज्ञ श्री राजकरण बम्मा एवं श्री लिंबाजी भिवाजी ने किया। इसमें रंगमंच की विभिन्न विधियों का प्रशिक्षण दिया गया तथा 'भगवत् गीता' नाटक के अभिनय का अभ्यास कराया गया।

20 सितंबर, 2025 को औपचारिक रूप से हिंदी दिवस समारोह का आयोजन हुआ, जिसका शुभारम्भ द्वीप-प्रज्वलन एवं गणेश-वंदना से हुआ। सिंगापुर से श्रीमती श्वेता वर्मा ने कथक नृत्य तथा मॉरीशस से श्री रामालिंगम अर्नाचलम ने भरतनाट्यम और सुश्री लोहिनी रामाना ने कुचिपुड़ी नृत्य का प्रदर्शन किया।

इस उपलक्ष्य में 12 से 15 आयु वर्ग के प्रतिभागियों के लिए 'आओ, हिंदी सीखें' विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय हिंदी संवाद प्रतियोगिता के प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं के संवाद वीडियो के माध्यम से प्रस्तुत किए गए।

विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने अपने स्वागत-भाषण में सभी गण्यमान्य अतिथियों एवं हिंदी-प्रेमियों का स्वागत करते हुए हिंदी का मान बढ़ाने और इसका जयकार करने का आह्वान किया।

भारतीय उप-उच्चायुक्त श्री विमर्श आर्यन ने बहुभाषी समाज में हिंदी को एक सेतु भाषा के रूप में स्थापित करने का महत्त्व बताते हुए व्यक्तित्व विकास और सामाजिक एकता में इसके योगदान पर प्रकाश डाला।

लोक सेवा एवं प्रशासनिक सुधार मंत्री, श्री लछमाना राज पेंटिया के अनुसार हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, इतिहास और पहचान का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि भाषा तभी तक जीवित रहती है, जब तक लोग उसे बोलते और जीते हैं।

मुख्य अतिथि, स्वास्थ्य एवं कल्याण मंत्री, श्री अनिल कुमार बेचु ने मॉरीशस में हिंदी भाषा को जीवित रखने में आर्य समाज, हिंदी प्रचारिणी सभा और पंडित वासुदेव विष्णुदयाल के अभूतपूर्व योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि आर्य समाज ने डॉ. मणिलाल और आर. के. बुदन के नेतृत्व में हिंदी को आगे बढ़ाया, जबकि हिंदी प्रचारिणी सभा ने शिक्षा और वार्षिक उत्सवों के माध्यम से हिंदी को जन-जन तक पहुँचाया, जिसमें भगत बंधुओं का विशेष योगदान रहा।

इस अवसर पर श्रीमती आराधना झा श्रीवास्तव (सिंगापुर) की पुस्तक 'भारत मुझमें बसता है', श्री धनराज शम्भु (मॉरीशस) द्वारा लिखित 'प्यार तो प्यार है' तथा आईसीसीआर हिंदी पीठ, प्रो. राज शेखर की पुस्तक 'डोडो और अन्य कहानियाँ' का लोकार्पण किया गया।

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय हिंदी संवाद प्रतियोगिता के विजेताओं के नामों की घोषणा की गयी और अफ्रीका व मध्य पूर्व के अंतर्गत, मॉरीशस से तृतीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले दर्शिनी लोदेनाथ एवं मुदिता देबीदीन को प्रमाण-पत्र एवं नकद पुरस्कार भेंट किए गए। विश्व हिंदी सचिवालय तथा हिंदी स्कूल फ़ेडरेशन के सहयोग से आयोजित राष्ट्रीय हिंदी गीत प्रतियोगिता के विजेताओं को भी प्रमाण-पत्र तथा नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

इस अवसर पर श्री राजकरण बम्मा एवं श्री लिंबाजी भिवाजी के निर्देशन में 'भगवत् गीता' नाटक का मंचन किया गया, जिसमें सिंगापुर से श्रीमती आराधना झा श्रीवास्तव, श्री राजीव कुमार मिश्रा एवं श्रीमती श्वेता वर्मा सिंघल तथा मॉरीशस से श्री राजेश्वर सितोहल, श्री प्रेम सिबालक, सुश्री मिष्ठा रानी सिबालक एवं सुश्री लेखांक्षा दसोय ने भाग लिया। तकनीकी सहयोग श्रीमती सोबिदा संकर, श्री विशाल कुमार अंचराज, श्री रामलिंगम अर्नाचलम, सुश्री लोहिनी रामाना एवं सुश्री लीनिशा देबीदोयाल ने प्रदान किया, जबकि गायन और संगीत संयोजन में श्री किस्ना रामा, श्रीमती धनवंती बाचू, सुश्री कुमिला आपासामी, श्री अनंत कुमार चत्तु एवं श्री कृष्ण बक्तोबर शामिल थे। नाटक मंचन के पश्चात् सम्मानित अतिथियों द्वारा सभी कलाकारों को स्मारक चित्र प्रदान किए गए।

उपमहासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय, डॉ. शुभंकर मिश्र ने धन्यवाद-ज्ञापन किया और मंच-संचालन, श्रीमती आराधना झा श्रीवास्तव, संस्थापक, उगना नाट्य मंडली (सिंगापुर) एवं डॉ. शशि दुकन (मॉरीशस) द्वारा किया गया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

हिंदी दिवस 2025 के उपलक्ष्य में आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता : 'राष्ट्र के प्रति प्रेम'

हिंदी दिवस 2025 के उपलक्ष्य में हिंदी स्कूल फ़ेडेरेशन, भारतीय उच्चायोग तथा विश्व हिंदी सचिवालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 30 जुलाई, 2025 को एक राष्ट्रीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय 'राष्ट्र के प्रति प्रेम' निर्धारित किया गया था। इसमें मॉरीशस के विभिन्न विद्यालयों से ग्रेड 6 और ग्रेड 11 के विद्यार्थियों ने सक्रिय सहभागिता की। कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्रभक्ति की भावना का पोषण करना तथा हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूकता बढ़ाना था।

डॉ. माधुरी रामधारी ने अपने स्वागत-भाषण में कहा कि यह अत्यंत दुर्लभ अवसर है, जब प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी एक ही मंच पर एकत्रित होकर हिंदी में अभिव्यक्ति करते हैं। उन्होंने हिंदी के वैश्विक विस्तार में मॉरीशस की भूमिका को रेखांकित किया और इस कार्यक्रम को 'हिंदी की बगिया' की संज्ञा दी, जिसमें सभी छात्र प्रतिभागी 'हिंदी के पुष्प' के रूप में इस बगिया को सुशोभित कर रहे हैं।

श्री प्रेमदीप चमन ने कहा कि एक श्रेष्ठ नागरिक बनने के लिए हिंदी भाषा को संस्कार की भाषा के रूप में अपनाना आवश्यक है।

कार्यक्रम के अंतर्गत सबसे पहले ग्रेड 6 के विद्यार्थियों द्वारा राष्ट्रप्रेम पर गीतों का सुंदर गायन किया गया। उसके बाद ग्रेड 11 के विद्यार्थियों द्वारा राष्ट्र-निर्माण संबंधी गीतों की प्रस्तुति हुई।

श्री अमिचंद रघुबर, सचिव, हिंदी स्कूल फ़ेडेरेशन ने सभी सहभागियों, आयोजकों, वक्ताओं एवं सहयोगी संस्थाओं के प्रति आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती प्रभा देवी शंकर द्वारा किया गया। यह आयोजन हिंदी भाषा की गरिमा, प्रासंगिकता एवं उपयोगिता को नई पीढ़ी के समक्ष प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करने का माध्यम बना।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा लेखक-सम्मेलन

18 अगस्त, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय के व्याख्यान/संगोष्ठी कक्ष, फ़ेनिक्स में लेखक-सम्मेलन का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा व मानव संसाधन मंत्रालय के कार्यवाहक मुख्य तकनीकी अधिकारी श्री निरंजन बिगन उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस की पूर्व द्वितीय सचिव श्रीमती सुनीता पाहूजा तथा मॉरीशस से श्रीमती अंजु घरभरन के संयुक्त संपादन में प्रकाशित पुस्तक 'मॉरीशस की साहित्यिक सुगंध' पर चर्चा हुई तथा पुस्तक में योगदान देने वाले वरिष्ठ एवं नवोदित मॉरीशसीय हिंदी लेखकों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ डॉ. माधुरी रामधारी, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय के स्वागत-भाषण से हुआ। उन्होंने श्रीमती सुनीता पाहूजा का संक्षिप्त परिचय देते हुए पुष्पगुच्छ के साथ उनका स्वागत किया और पुस्तक के प्रकाशन पर प्रसन्नता व्यक्त की।

श्रीमती सुनीता पाहूजा ने मॉरीशस के अपने अनुभवों, अच्छे संस्मरणों और भारतीय उच्चायोग में अपने कार्यों की चर्चा की। साथ ही, मॉरीशस के साहित्यकारों व परिचितों के साथ आत्मीयता के अच्छे पलों को भी याद किया। उन्होंने मंचासीन अतिथियों को 'मॉरीशस की साहित्यिक सुगंध' पुस्तक भेंट की।

मुख्य अतिथि श्री निरंजन बिगन ने स्व. श्री अभिमन्यु अनत के रचना-संसार पर बात की और उनके उपन्यासों को पढ़ने और कालजयी रचना करने का प्रोत्साहन दिया।

श्रीमती अंजु घरभरन ने बताया कि यह पुस्तक श्री अभिमन्यु अनत एवं डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि को समर्पित है, जो मॉरीशसीय हिंदी साहित्य जगत् के महत्त्वपूर्ण स्तंभ हैं। उन्होंने डॉ. चिंतामणि की एक कविता भी प्रस्तुत की।

इस अवसर पर वरिष्ठ रचनाकारों में श्री लालदेव अंचराज, श्री विष्णुदत्त मधु, श्री प्रेमदीप चमन, श्रीमती कल्पना लालजी, श्री धनराज शम्भु, श्रीमती बिद्रंती शम्भु, डॉ. अलका धनपत, डॉ. शशि दुकन तथा नवोदित लेखकों में श्रीमती सविता तिवारी, श्री केवल नायक, श्री विश्वानंद पतिया, श्रीमती विजेता भागी, सुश्री श्रावणी बिहारी, सुश्री मनिता नेपोल, डॉ. सोमदत्त काशीनाथ एवं श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी उपस्थित थे। राजस्थान सूचना केंद्र के अध्यक्ष, श्री हिंगलाज दान रत्नू, नेपाल से मनोसामाजिक परामर्शदाता, श्रीमती भावना पराजुलि, दिल्ली से श्रीमती प्रीति झा एवं झारखण्ड से डॉ. शारदा ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम के अंत में श्री मोहनलाल जगेसर ने सुमधुर गीत से सभागार को मंत्रमुग्ध कर दिया।

विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा उपमहासचिव डॉ. शुभंकर मिश्र ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

हिंदी दिवस 2025 : भारत

इंदौर

14 सितंबर, 2025 को भारतीय प्रबंधन संस्थान आईआईएम, इंदौर में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन संबोधन में संस्थान के निदेशक प्रो. हिमांशु राय ने हिंदी के संरक्षण और संवर्धन के प्रति आईआईएम की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। उन्होंने हिंदी को संकोच से नहीं, बल्कि गर्व के साथ अपनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम के अंतर्गत 'हिंदी पत्रकारिता : चुनौतियाँ और अवसर' विषय पर पैनल चर्चा हुई, जिसमें भारत सरकार के अतिरिक्त सचिव आईएएस, श्री नीतीश्वर कुमार, टीवी टुडे/इंडिया टुडे समूह के 'साहित्य तक' एवं 'साहित्य आजतक' के संपादक श्री जय प्रकाश पांडे तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के लेडी श्रीराम कॉलिज के पत्रकारिता विभागाध्यक्ष प्रो. (डॉ.) वर्तिका नंदा ने सहभागिता की। पैनल चर्चा का संचालन प्रो. हिमांशु राय ने किया। श्री जय प्रकाश पांडे ने हिंदी पत्रकारिता में सोशल मीडिया की भूमिका को रेखांकित करते हुए अनुवाद और डिजिटल माध्यमों के ज़रिए हिंदी की बढ़ती पहुँच पर प्रकाश डाला। श्री नीतीश्वर कुमार ने साहित्य और सिनेमा के माध्यम से राष्ट्रीय पहचान के निर्माण में हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। प्रो. वर्तिका नंदा ने भाषाओं के अनावश्यक मिश्रण पर चिंता व्यक्त करते हुए हिंदी की गरिमा, सांस्कृतिक सम्मान और समृद्धि को बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम के अंत में संस्थान की हिंदी पत्रिका 'ज्ञान शिखर' के दसवें अंक का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। इस अंक में आईआईएम समुदाय के सदस्यों की शोधपरक एवं रचनात्मक कृतियाँ, शोध आलेख, कविताएँ और निबंध शामिल हैं।

साभार : भारतीय प्रबंध संस्थान, इंदौर की वेबसाइट

चंडीगढ़

भारतीय स्टेट बैंक के स्थानीय प्रधान कार्यालय, चंडीगढ़ द्वारा 17 सितंबर, 2025 को हिंदी दिवस समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाप्रबंधक (नेटवर्क-1), चंडीगढ़ मंडल श्री मनमीत एस. छाबड़ा ने की। समारोह के दौरान मंडल की हिंदी पत्रिका 'शिखर' का विमोचन किया गया तथा कविता-पाठ एवं गीत-गायन के प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। अपने संबोधन में श्री मनमीत एस. छाबड़ा ने कहा कि भाषा व्यवसाय का मूल आधार है और ग्राहकों से उनकी क्षेत्रीय भाषा में संवाद करने से व्यावसायिक संबंध सुदृढ़ होते हैं। कार्यक्रम में राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के प्रयोग की समीक्षा प्रस्तुत की गई और इसके विस्तार हेतु सुझाव दिए गए।

साभार : इंडिया न्यूज़ कॉलिंग.कॉम

प्रयागराज

हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलिज, प्रयागराज के हिंदी विभाग द्वारा 1 सितंबर, 2025 से 15 सितंबर, 2025 तक हिंदी दिवस एवं राजभाषा पखवाड़ा का सफल आयोजन किया गया, जिसमें हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलिज के साथ-साथ जगत तरण गर्ल्स डिग्री कॉलिज, ईश्वर शरण डिग्री कॉलिज तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों को हिंदी लेखन एवं अभिव्यक्ति के विविध अवसर प्राप्त हुए। इस अवसर पर कॉलिज की प्रो. नसरीन बेगम ने 'राजभाषा हिंदी और राष्ट्र की एकता' विषय पर व्याख्यान दिया कि हिंदी केवल राजभाषा ही नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक एकता और भावनात्मक जुड़ाव का सशक्त माध्यम है। उन्होंने हिंदी को विविधताओं में एकता स्थापित करने वाला सेतु बताया। कॉलिज की प्राचार्या प्रो. नासेहा उस्मानी ने हिंदी के संवर्धन में युवा पीढ़ी की भूमिका की चर्चा की।

साभार : हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलिज की वेबसाइट

भोपाल

हिंदी दिवस के अवसर पर 14 सितंबर, 2025 को भोपाल स्थित रवीन्द्र भवन के अंजनी सभागार में भारतीय मातृभाषा अनुष्ठान कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ हुआ। इस दो दिवसीय कार्यक्रम के उद्घाटन में मध्यप्रदेश के माननीय उच्च शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार ने कहा कि मध्य प्रदेश ने प्रमाणित किया कि चिकित्सा एवं तकनीक शिक्षा हिंदी में भी संभव है। इस अवसर पर पद्मश्री से सम्मानित श्री विष्णु पंडया, माननीय मुख्यमंत्री के संस्कृति सलाहकार व वीर भारत न्यास के न्यासी सचिव श्रीराम तिवारी एवं संस्कृति संचालक श्री एन.पी. नामदेव की गरिमामयी उपस्थिति रही।

साभार : संस्कृति विभाग मध्य प्रदेश का इंस्टाग्राम

रोपड़

आदरणीय प्रोफेसर राजीव आहूजा, निदेशक आईआईटी रोपड़ एक वक्ता के रूप में हिंदी दिवस 2025 और 5वां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन महात्मा मंदिर कन्वेंशन सेंटर गांधीनगर, गुजरात में उपस्थित हुए ।

सितंबर 2025 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रोपड़ के निदेशक प्रो. राजीव आहूजा को महात्मा मंदिर, गांधीनगर, गुजरात में आयोजित 5वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन और हिंदी दिवस समारोह में आमंत्रित किया गया। मंच पर उनके साथ उपस्थित रहे प्रो. नवीन चंद सोनी, कुलपति, उत्तराखंड मुख्य विश्वविद्यालय तथा डॉ. सी. जय शंकर बाबू, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय। सम्मेलन में प्रो. आहूजा को श्रीमती भारती, टीएसओ, राजभाषा विभाग द्वारा सम्मानित किया गया। अपने प्रेरक भाषण में उन्होंने कहा कि आई.आई.टी. रोपड़ में प्रथम वर्ष के छात्रों को हिंदी माध्यम में अध्ययन की अनुमति दी गई है, ताकि दूरदराज़ क्षेत्रों से आने वाले छात्रों को पढ़ाई में सहजता हो। समावेशी शिक्षा और भाषाई आत्मनिर्भरता की दिशा में यह एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

साभार : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रोपड़ का फ़ेसबुक पेज

बिहार

जनगणना कार्य निदेशालय, बिहार में 'हिंदी पखवाड़ा 2025' 14 से 29 सितंबर, 2025 तक आयोजित किया गया। कार्यक्रम में भा. प्र. से. निदेशक महोदय श्री एम. रामचंद्रुडु ने कार्यक्षेत्र में राजभाषा हिंदी के व्यापक प्रयोग पर बल दिया। इस अवसर पर 16 सितंबर को श्रुतलेखन और 17 सितंबर को टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता रखी गई।

साभार : जनगणना कार्य निदेशालय का फ़ेसबुक पेज

हिंदी दिवस 2025 : विश्व भर

सैन फ़्रांसिस्को

18 सितंबर, 2025 को भारतीय कौंसुलावास, सैन फ़्रांसिस्को ने उत्तर प्रदेश मंडल ऑफ़ अमेरिका (यूपीएमए) तथा बे एरिया की 20 से अधिक भारतीय सामुदायिक संस्थाओं के सहयोग से हिंदी दिवस पखवाड़ा का सफल आयोजन किया। कार्यक्रम में कौंसुल जनरल ने मुख्य संबोधन दिया और माननीय गृहमंत्री का संदेश उपस्थित जनसमूह को पढ़कर सुनाया। कार्यक्रम में संगीत और नाट्य-प्रस्तुतियों के साथ हिंदी साहित्य पर रोचक चर्चाएँ हुईं।

साभार : जीसीआईएसएफ़.गॉव.इन

जिबूती

जिबूती स्थित भारतीय दूतावास ने 14 सितंबर, 2025 को हिंदी दिवस मनाया। कार्यक्रम में हिंदी फ़िल्मों के नाम और पर्यायवाची शब्दों की प्रश्नोत्तरी तथा कविता और कहानी का पाठ किया गया। कार्यक्रम में हास्य और चिंतन दोनों का सामंजस्य प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर राजदूत श्री एम. कीवोम ने भारत-जिबूती द्विपक्षीय संबंधों को मज़बूत करने में हिंदी के महत्त्व पर प्रकाश डाला। जिबूती के संस्कृति मंत्री की तकनीकी सलाहकार श्रीमती मदीना एस. अली ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

साभार : जिबूती स्थित भारतीय दूतावास का ट्विटर

बैंकॉक

17 सितंबर, 2025 को चियांग माई विश्वविद्यालय, नखोन राचासिमा राजभाट विश्वविद्यालय, चुलालोंगकॉर्न विश्वविद्यालय, सिल्पाकॉर्न विश्वविद्यालय, थाई भारत सांस्कृतिक संस्थान और एसवीसीसी के विद्यार्थियों ने हिंदी दिवस के अवसर पर अनेक रचनात्मक गतिविधियाँ कीं। कार्यक्रम में जापान के ओसाका विश्वविद्यालय के विशेष नियुक्त सह-प्राध्यापक डॉ. वेद प्रकाश सिंह ने 'विश्व में हिंदी-शिक्षण का इतिहास और महत्त्व' पर जानकारीपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया।

साभार : भारतीय दूसावास बैंकॉक का इंस्टाग्राम

वैलिंग्टन

28 सितंबर, 2025 को भारतीय उच्चायोग और वेलिंग्टन हिंदी विद्यालय ने जीवंत सांस्कृतिक प्रदर्शन के साथ हिंदी दिवस मनाया। इस अवसर पर उच्चायुक्त नीता भूषण का वीडियो संदेश प्रदर्शित किया गया। कार्यक्रम में सीडी'ए ए.आई. ने विद्यार्थियों के कौशल और हिंदी भाषा के प्रति प्रेम का सम्मान करते हुए उन्हें पदक, ट्रॉफ़ी और प्रमाण-पत्र प्रदान किए।

साभार : भारतीय उच्चायोग, वैलिंग्टन का फ़ेसबुक पेज

शिकागो

संयुक्त राज्य अमेरिका में भारतीय वाणिज्य दूतावास, शिकागो द्वारा 14 सितंबर, 2025 को हिंदी दिवस का कार्यक्रम हिंदी समन्वय समिति के सहयोग से आयोजित हुआ। अपने संबोधन में माननीय काउंसुल जनरल ने प्रवासी समुदाय में हिंदी के संरक्षण पर बल देते हुए अपनी सांस्कृतिक विरासत से जुड़े रहने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम चला।

साभार : भारतीय महावाणिज्य दूतावास, शिकागो का फ़ेसबुक पृष्ठ

शंघाई

14 सितंबर, 2025 को शंघाई स्थित भारत के महावाणिज्य दूतावास ने ब्रिटिश अंतरराष्ट्रीय विद्यालय में हिंदी दिवस मनाया। यह इस क्षेत्र का पहला अंतरराष्ट्रीय विद्यालय है, जिसने हिंदी को औपचारिक रूप से अपने पाठ्यक्रम में शामिल किया है। कार्यक्रम में निबंध, लघुकथा तथा संस्कृत श्लोक आदि के माध्यम से भारत की भाषाई विरासत को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर 'मेरी प्रिय हिंदी फ़िल्म' विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता हुई, जिसमें कनिष्ठ एवं वरिष्ठ विद्यार्थियों और वयस्कों ने भाग लिया। विजेताओं को समारोह में सम्मानित किया गया। महावाणिज्य दूत श्री प्रतीक माथुर ने विद्यालय द्वारा हिंदी को पाठ्यक्रम में शामिल किए जाने की सराहना की।

साभार : डेलीपायनियर.कॉम

कंबोडिया

14 सितंबर, 2025 को भारतीय दूतावास, नोम पेन्ह में हिंदी दिवस का कार्यक्रम हुआ, जिसमें गीत-प्रस्तुति और हिंदी-प्रश्नोत्तरी ने वातावरण को रोचक और उल्लासपूर्ण बना दिया। कार्यक्रम के माध्यम से हिंदी भाषा के प्रति प्रेम और जुड़ाव को सशक्त रूप से अभिव्यक्त किया गया।

साभार : भारतीय दूतावास नोम पेन्ह का फ़ेसबुक पेज

डेनमार्क

14 सिंतबर, 2025 को भारतीय राजदूतावास, कोपेनहेगन में हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर माननीय राजदूत श्री मनीष प्रभात ने डेनमार्क में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान देने वाले महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में कोपेनहेगन विश्वविद्यालय के हिंदी विद्वान प्रोफ़ेसर एलमार रेनर तथा डेनमार्क में कई वर्षों से हिंदी सेवा में संलग्न हिंदी प्रेमी श्री विशाल सिसोदिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

साभार : भारतीय राजदूतावास कोपेनहेगेन का फ़ेसबुक पृष्ठ

लिथुआनिया

26 सितंबर, 2025 को भारतीय दूतावास, लिथुआनिया में हिंदी दिवस बड़े उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में भारतीय प्रवासी समुदाय के साथ-साथ स्थानीय लिथुआनियाई मित्रों ने भी सक्रिय सहभागिता की। इस अवसर पर विदेशों में हिंदी भाषा के महत्त्व पर विचार-विमर्श हुआ और प्रतिभागियों ने हिंदी के प्रति अपना भावनात्मक जुड़ाव अभिव्यक्त किया।

साभार : भारतीय दूतावास लिथुआनिया का फ़ेसबुक पृष्ठ

दक्षिण अफ़्रीका

20 सितंबर, 2025 को दक्षिण अफ़्रीका स्थित वाणिज्य दूतावास, जोहान्सबर्ग ने हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम में प्रेरक

भाषण, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ और हिंदी भाषा पर रोचक परिचर्चा हुई।

साभार : वाणिज्य दूतावास जोहान्सबर्ग की वेबसाइट

मैड्रिड

14 सितंबर, 2025 को मैड्रिड में हिंदी दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। काउंसलर श्री चेराकुंग जेलियांग ने भाषाई पुल के रूप में हिंदी की भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के दौरान निबंध और कविता-लेखन प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नामों की घोषणा की गई।

साभार : इंडोयुरोपियन की वेबसाइट

एडिनबर्ग

16 सितंबर, 2025 को भारत के महावाणिज्य दूतावास, एडिनबर्ग ने हिंदी पाठशाला, ग्लासगो के सहयोग से ओम हिंदू मंदिर, ग्लासगो में हिंदी दिवस के विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में विभिन्न आयु समूहों के प्रतिभागियों ने हिंदी भाषा के प्रति अपने प्रेम और उत्साह का प्रदर्शन किया। विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए और सभी प्रतिभागियों को उनके रचनात्मक योगदान और उत्साह के लिए सम्मानित किया गया।

साभार : इंडोयुरोपियन की वेबसाइट

डबलिन, आयरलैंड

23 सितंबर, 2025 को भारतीय दूतावास, डबलिन ने हिंदी दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें संविधान में उल्लिखित भारत की 15 भाषाओं के प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन राजदूत एच.ई. श्री अखिलेश मिश्रा ने किया और उन्होंने उपस्थित

सभा को संबोधित करते हुए हिंदी भाषा और उसकी सांस्कृतिक महत्ता पर प्रकाश डाला।

साभार : भारतीय दूतावास, डबलिन का फ़ेसबुक पेज

सूरीनाम

सूरीनाम हिंदी परिषद् के 48वें स्थापना दिवस एवं हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने कर्म, धर्म, गौ माता, हिंदी भाषा तथा गोस्वामी तुलसीदास के योगदान जैसे विषयों पर प्रभावपूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत किए। मंद्राचल घिसाइदूबे और आर्य सोमवीर (एसवीसीसी) के विचारों ने कार्यक्रम को सारगर्भित बनाया। सतरंगी डांस स्कूल तथा रेशम और सुनंदा गोपी की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने आयोजन को आकर्षक स्वरूप प्रदान किया। प्रतियोगिता में विशाल लचमन, प्राण हरपाल और नम्रता बोहोरी क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहे तथा स्वामीपर्साद जानकी और साक्षी हीरा को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। इसी क्रम में विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय संवाद प्रतियोगिता 'आओ, हिंदी सीखें' में सूरीनाम हिंदी परिषद् के अंतर्गत संचालित नेता दल हिंदी स्कूल के विद्यार्थियों बच्चु श्रेष्टी रुद्रानी एवं मुख्तो रोहन आर्यन ने भाग लेते हुए तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। परिषद् एवं विद्यालय ने विद्यार्थियों को बधाई देते हुए प्रतियोगिता के आयोजन हेतु विश्व हिंदी सचिवालय के प्रति आभार व्यक्त किया।

साभार : श्री सत्यानंद प्रमसुख, सूरीनाम हिंदी परिषद् के अध्यक्ष की रिपोर्ट

ऑकलैंड

न्यूज़ीलैंड के ऑकलैंड स्थित डाइवर्सिटी सेंटर, पापाटोएटोए में 14 सितंबर, 2025 को भारतीय उच्चायोग वैलिंगटन, भारत का वाणिज्य दूतावास ऑकलैंड, 'भारत-दर्शन' हिंदी पत्रिका तथा स्थानीय हिंदी संस्थाओं के सहयोग से इंडियन एसोसिएशन मेनुकाऊ एनज़ेड और एनज़ेड सेंट्रल इंडियन एसोसिएशन के संयुक्त तत्त्वावधान में हिंदी दिवस समारोह संपन्न हुआ। पंडित अश्वनी वत्स के मंत्रोच्चार के बीच भारत के काउंसल जनरल डॉ. मदन मोहन सेठी द्वारा दीप-प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर उन्होंने भारत-दर्शन द्वारा विकसित 'दोहा समीक्षक' सॉफ़्टवेयर का लोकार्पण किया तथा 11 देशों के 26 लेखकों की रचनाओं से युक्त पुस्तक 'विदेशी ज़मीन के व्यंग्य' का विमोचन भी किया। इस पुस्तक का संपादन आचार्य राजेश कुमार और रोहित कुमार हैप्पी ने किया है। साथ ही 'विश्वरंग अंतरराष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड' का पोस्टर भी जारी किया गया, जिसके 50 से अधिक देशों में आयोजन की जानकारी दी गई। भारतीय उच्चायुक्त नीता भूषण ने वीडियो संदेश के माध्यम से शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए 'भारत-दर्शन पत्रिका' की 29वीं वर्षगाँठ पर बधाई दी। कार्यक्रम में 'न्यूज़ीलैंड में हिंदी की विकास-यात्रा' विषय पर प्रदर्शनी लगी, जिसमें न्यूज़ीलैंड में हिंदी-शिक्षण और प्रकाशन की ऐतिहासिक झलकियों को प्रदर्शित किया गया। कार्यक्रम का संचालन दीपाली कुमार, रूपा सचदेव और रोहित कुमार हैप्पी ने किया तथा समापन एनज़ेड सेंट्रल इंडियन एसोसिएशन के अध्यक्ष वीर खर के धन्यवाद-ज्ञापन के साथ हुआ।

साभार : न्यूज़ीलैंड से श्री रोहित कुमार 'हैप्पी' की रिपोर्ट

मॉरीशस

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस एवं हिंदी स्कूल फ़ेडरेशन, मॉरीशस द्वारा

27 सितंबर, 2025 को हिंदी फ़िल्म स्क्रीनिंग कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुश्री श्रुति पाठक, द्वितीय सचिव (हिंदी एवं संस्कृति) ने अपने संबोधन में छात्रों को दैनिक जीवन में हिंदी के प्रयोग के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम ही नहीं, बल्कि संस्कृति और पहचान का आधार भी है। इस अवसर पर हिंदी स्पीकिंग यूनियन की अध्यक्षा डॉ. अंजलि चिंतामणि, भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन की अध्यक्षा श्रीमती वर्षा रानी तथा हिंदी स्कूल फ़ेडरेशन के अध्यक्ष श्री प्रेमदीप चमन ने भी अपने प्रेरणादायी वक्तव्यों के माध्यम से छात्रों को हिंदी-अध्ययन के महत्त्व से अवगत कराया और उन्हें भाषा का रचनात्मक उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया।

साभार : भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस का फ़ेसबुक पेज

लंदन

16 सितंबर, 2025 को भारतीय उच्चायोग, लंदन ने नेहरू केंद्र में हिंदी शिक्षा परिषद्, यू.के. और कथा यू.के. के सहयोग से हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया। यह कार्यक्रम राष्ट्रकवि एवं पद्म विभूषण रामधारी सिंह दिनकर को समर्पित था। कार्यक्रम में हिंदी शिक्षा परिषद् यू.के. के छात्रों ने कवि की चयनित कविताओं का पाठ किया। आयोजन के दूसरे भाग में हिंदी विद्वान डॉ. अरुणा अजितसरिया एमबीई, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, श्री शिव कांत शर्मा, पूर्व बीबीसी हिंदी रेडियो संपादक एवं श्री विजय राणा, बीबीसी वर्ल्ड सर्विस रेडियो के पूर्व वरिष्ठ संपादक ने रामधारी सिंह दिनकर के उत्कृष्ट साहित्य और विभिन्न पीढ़ियों पर उनकी कविताओं के प्रभाव पर चर्चा की। समारोह में एल्स्ट्री एवं बोरेहमवुड के उपमहापौर तुषार कुमार, नेहरू केंद्र लंदन के उपनिदेशक राकेश कुमार तथा भारतीय उच्चायोग लंदन में हिंदी एवं संस्कृति अताशे डॉ. अनुराधा पांडेय सहित अनेक गणमान्य अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस वर्ष का आयोजन विशेष रूप से भावपूर्ण था, क्योंकि दिनकर जी की प्रपौत्री भी समारोह में उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन कथा यू.के. के महासचिव श्री तेजेन्द्र शर्मा एम.बी.ई. ने किया।

साभार : हिंदी शिक्षा परिषद् यू.के. तथा नेहरू सेंटर लंदन का फ़ेसबुक

न्यूज़ीलैंड

साउथलैंड हिंदी स्कूल, न्यूज़ीलैंड में 12 सितंबर, 2025 को हिंदी दिवस अत्यंत उत्साह से मनाया गया। समारोह में वरिष्ठ वर्ग के विद्यार्थियों ने मर्यादा, त्याग और सत्य के आदर्शों को केंद्र में रखकर एक सशक्त एकांकी का मंचन किया, जबकि कनिष्ठ वर्ग के विद्यार्थियों ने रामायण का भावपूर्ण दृश्य प्रस्तुत कर दर्शकों का मन मोह लिया। दोनों प्रस्तुतियों में विद्यार्थियों की संवाद-अभिव्यक्ति, वेशभूषा और अभिनय सराहनीय रहे। सांस्कृतिक विविधता की झलक प्रस्तुत करते हुए रंग-बिरंगे परिधानों में सुसज्जित विद्यार्थियों ने 'केरल बोट डांस' की सामूहिक प्रस्तुति भी दी। यह आयोजन विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा के प्रदर्शन का सशक्त मंच सिद्ध हुआ।

साभार : साउथलैंड हिंदी स्कूल, न्यूज़ीलैंड की रिपोर्ट

कुआलालंपुर, मलेशिया

मलेशिया की राजधानी कुआलालंपुर में भारत के उच्चायोग ने 20 सितंबर, 2025 को नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से हिंदी दिवस उत्सव का आयोजन किया। उद्घाटन-भाषण भारत के उच्चायुक्त श्री बी.एन. रेड्डी ने दिया। मलेशिया में सहयोग करने वाले सामुदायिक संगठनों एवं विद्यालयों जैसे भारत क्लब, बिहार सांस्कृतिक संघ, गीताश्रम, महाराष्ट्र मंडल मलेशिया, मारवाड़ी युवा मंच, ग्लोबल इंडियन अंतरराष्ट्रीय विद्यालय, सैफोल अंतरराष्ट्रीय विद्यालय, स्प्राउट अकादमी, तानराटा अंतरराष्ट्रीय विद्यालय और विकास अंतरराष्ट्रीय विद्यालय को स्मृतिचिह्न एवं सम्मान प्रदान किए गए। समारोह में विद्यार्थियों ने 'विविधता में एकता' और 'छात्रों पर सोशल मीडिया का प्रभाव' विषयों पर नाटक प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का एक विशेष आकर्षण था 'चर्चा फटाफट', जो उपस्थित दर्शकों के लिए तत्काल बहस प्रतियोगिता थी, जिसका आयोजन पत्रकार और लेखिका श्रीमती आराधना द्वारा किया गया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र के हिंदी छात्रछात्राओं ने 'मैं हिंदी क्यों सीखता हूँ' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। बिहार सांस्कृतिक संघ गीताश्रम महाराष्ट्र मंडल और मारवाड़ी युवा मंच की ओर से गीत और नृत्य प्रस्तुत किए गए। उपउच्चायुक्त श्रीमती सुभाषिनी नारायणन ने सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कारों से सम्मानित किया और नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र की निदेशिका श्रीमती विजयलक्ष्मी सुंदरराजन ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए।

साभार : भारतीय उच्चायोग कुआलालंपुर, मलेशिया की औपचारिक वेबसाइट

सिंगापुर

14 सितंबर, 2025 को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में विश्व साहित्य सेवा संस्थान, सिंगापुर द्वारा संस्थान की सिंगापुर इकाई की संस्थापक एवं अध्यक्षा अनुसूया साहू के नेतृत्व में काव्य-गोष्ठी एवं सांस्कृतिक समारोह आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय उच्चायोग सिंगापुर के द्वितीय सचिव, श्री अरविंद श्रीवास्तव तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ज्योति श्रीवास्तव की गरिमामयी उपस्थिति ने आयोजन की शोभा बढ़ाई। सिंगापुर की आराधिका मन्ना ने पारंपरिक नृत्य से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में अनुसूया साहू ने प्रवासी भारतीयों के लिए मातृभाषा एवं संस्कृति के संरक्षण को नैतिक दायित्व बताया। मुख्य अतिथि श्री अरविंद श्रीवास्तव ने हिंदी की गौरवपूर्ण यात्रा का वर्णन किया और हिंदी की महिमा पर एक प्रभावपूर्ण कविता प्रस्तुत की। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में गौरी श्रीवास्तव गुप्ता के निर्देशन में हिंदी नाटक 'नहले पे दहला' का सफल मंचन हुआ, जिसमें हेमा कृपलानी और पंकज वर्मा ने प्रमुख भूमिकाएँ निभाईं। नृत्यांगना जय श्री श्रीनिवासन ने 'अलबेला सजन आयो रे' पर पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत कर दर्शकों का मन मोह लिया। लेखक गौरव उपाध्याय के प्रेरक वक्तव्य ने जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने का संदेश दिया। इस अवसर पर शांति प्रकाश उपाध्याय के काव्य-संग्रह *'मैं तुमसे एक होना चाहता हूँ'* तथा रत्नेश द्वारा अपने स्वर्गीय पिता श्री जगत नारायण पांडेय की स्मृति में लिखित पुस्तक *'हेरत हेरत हे सखी'* का लोकार्पण मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा संपन्न हुआ। कार्यक्रम में सिंगापुर में रह रहे भारतीय बच्चों ने भांगड़ा नृत्य किया। अंतिम सत्र में आलोक मिश्रा के कुशल संचालन में कवियों ने विविध रसों से परिपूर्ण रचनाएँ प्रस्तुत कीं। समारोह के अंत में सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ देने वाले बच्चों एवं कलाकारों को प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

साभार : विश्व साहित्य सेवा संस्थान, सिंगापुर की रिपोर्ट

फ़िजी

फ़िजी नेशनल यूनिवर्सिटी के भाषा एवं साहित्य विभाग द्वारा 1 से 5 सितंबर, 2025 तक हिंदी सप्ताह का सफल आयोजन हुआ, जिसका विषय था - 'भाषा, संस्कृति और विरासत का सम्मान'। सप्ताह भर विभिन्न रोचक प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं, जिनमें अंताक्षरी, काव्य-पाठ, आशु-भाषण, सुलेख तथा पोस्टर प्रतियोगिता शामिल थीं। इन गतिविधियों ने विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा, आत्मविश्वास और हिंदी भाषा के ज्ञान को प्रदर्शित करने के लिए रचनात्मक एवं शैक्षणिक मंच प्रदान किया। लगभग 80 विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और आयोजन समिति के समर्पण ने प्रत्येक कार्यक्रम की सफलता में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। समारोह का समापन शुक्रवार, 5 सितंबर, 2025 को नाताबुआ परिसर के नवरेलेवु व्याख्यान कक्ष में आयोजित आधिकारिक हिंदी दिवस कार्यक्रम के साथ हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि भारतीय उच्चायोग, सुवा के द्वितीय सचिव (हिंदी), श्री ईश्वर सिंह यादव थे। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। समारोह में प्रेरणादायक भाषण, आकर्षक सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ तथा एकता, पहचान और विरासत की भाषा के रूप में हिंदी के स्थायी महत्त्व पर विचार-विमर्श सम्मिलित था।

आभार : डॉ. सुभाषिणी कुमार, भाषा एवं साहित्य विभाग, फ़िजी नेशनल यूनिवर्सिटी

संगोष्ठी, सम्मेलन, कार्यशाला, जयंती, उत्सव एवं शैक्षणिक गतिविधियाँ

अंतरराष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी : 'पद्म भूषण श्री हरिवंशराय बच्चन की कविताएँ'

25 सितंबर, 2025 को रूसी राजकीय मानवीकि विश्वविद्यालय, मॉस्को, रूस ने ताशकंद राज्य प्राच्य अध्ययन संस्थान, उज़्बेकिस्तान तथा काशी हिंदू विश्वविद्यालय, बी.एच.यू., वाराणसी, भारत के तत्त्वावधान में 'पद्म भूषण श्री हरिवंशराय बच्चन की कविताएँ' विषय पर अंतरराष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया। रूसी और भारतीय विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने श्री हरिवंशराय बच्चन की अंग्रेज़ी और रूसी में अनूदित कविताओं का पाठ किया। बीएचयू के हिंदी विभाग के प्रोफ़ेसर डॉ. सत्य पाल शर्मा ने डॉ. हरिवंशराय बच्चन की काव्य-रचनाओं पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रसिद्ध भारतविद्, लेखक, अनुवादक तथा भारतीय छायावादी काव्य के विशेषज्ञ प्रोफ़ेसर डॉ. अलेक्ज़ेंडर सेनकेविच ने विद्यार्थियों को डॉ. बच्चन के काव्य-संग्रहों के रूसी अनुवादों की जानकारी दी।

साभार : हिंदी आर.एस.यू.एच. का फ़ेसबुक

वेब संगोष्ठी : 'हिंदी - राष्ट्रीय एकता और वैश्विक पहचान की ताकत'

15 सितंबर, 2025 को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) द्वारा आयोजित वेबिनार 'हिंदी : राष्ट्रीय एकता और वैश्विक पहचान की ताकत' में विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों तथा विश्वविद्यालय के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। वेबिनार का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता में हिंदी भाषा की भूमिका को उजागर करना था। चर्चा के प्रमुख बिंदुओं में हिंदी की सांस्कृतिक समरसता, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसकी प्रासंगिकता, डिजिटल युग में उसके विकास के अवसर एवं चुनौतियाँ, हिंदी साहित्य का वैश्विक दृष्टिकोण आदि विषय सम्मिलित थे। कार्यक्रम में डॉ. अनिल कुमार मिश्रा, वरिष्ठ क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू, क्षेत्रीय केंद्र, लखनऊ, डॉ. वंदना श्रीवास्तव, आचार्य, हिंदी विभाग, श्री जय नारायण मिश्र पी.जी. कॉलिज, लखनऊ, डॉ. रीना कुमारी, उपनिदेशक, इग्नू, क्षेत्रीय केंद्र लखनऊ एवं डॉ. पवंत सिंह, समन्वयक, इग्नू अध्ययन केंद्र, पुखरायां, कानपुर देहात प्रमुख वक्ताओं में थे।

साभार : साहित्य संहिता - https://www.sahityasamhita.org/2025/09/hindi-webinar.html?utm

वैश्विक लघुकथा संगोष्ठी

31 अगस्त, 2025 को वैश्विक हिंदी परिवार, नई दिल्ली ने विश्व हिंदी सचिवालय, केंद्रीय हिंदी संस्थान, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद्, वातायन तथा भारतीय भाषा मंच के संयुक्त तत्त्वावधान में 'वैश्विक लघुकथा संगोष्ठी' आयोजित की। मुख्य अतिथि वरिष्ठ लघुकथाकार तथा सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी, राजस्थान में हिंदी के प्रोफ़ेसर एवं सांस्कृतिक संकाय के अधिष्ठाता, डॉ. रामनिवास 'मानव' के अनुसार कथा-परिवार की महत्त्वपूर्ण विधा 'लघुकथा' है। इसका विस्तार पूरे विश्व में देखा जा सकता है। बर्मिंघम की वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. शैल अग्रवाल ने लघुकथा की तुलना फ़ास्ट फूड से करते हुए अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि इसे पढ़ते ही पाठक पर तुरंत प्रभाव होता है और उसमें नई ऊर्जा आ जाती है। इससे पूर्व विषय-प्रवर्तन करते हुए संस्था के अध्यक्ष डॉ. अनिल जोशी ने लघुकथा के स्वरूप एवं महत्त्व को रेखांकित किया।

डॉ. वेंकटेश्वर राव द्वारा स्वागत के उपरांत डॉ. पूजा अनिल के कुशल संचालन में संपन्न इस संगोष्ठी में टोक्यो (जापान) की डॉ. रमा पूर्णिमा शर्मा ने 'अनमोल सलाह', कोलोन (जर्मनी) की डॉ. शिप्रा शिल्पी सक्सेना ने 'धनाढ्य', आसन (नीदरलैंड) की डॉ. ऋतु शर्मा ने 'आधुनिक गिरमिटिया', मॉरिशस की अंजू घरभरन ने 'परम सुख', वर्जीनिया (अमेरिका) की डॉ. आस्था नवल ने 'बहरानी', टोरंटो (कनाडा) की डॉ. शैलजा सक्सेना ने 'कीमत', बर्मिंघम (यूके) की डॉ. शैल अग्रवाल ने 'तड़प', मैड्रिड (स्पेन) की डॉ. पूजा अनिल ने 'पत्र' और भारत से नई दिल्ली के सुभाष नीरव ने 'चिड़िया की दोस्ती', फ़रीदाबाद की अनीता वर्मा ने 'यही सत्य है' तथा भुवनेश्वर की अर्पणा संतसिंह ने 'बी पॉज़िटिव' लघुकथा का पाठ किया। तत्पश्चात् डॉ. शैलजा सक्सेना ने सारगर्भित समीक्षा प्रस्तुत की। इस अवसर पर सुनीता पाहूजा (नोएडा), कांता रॉय (भोपाल) और डॉ. तोमियो मिज़ोकामी (ओसाका, जापान) ने भी अपने विचार प्रकट किए। डॉ. सुरेशकुमार मिश्र ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार की औपचारिक वेबसाइट

नागरी लिपि के वैश्विक प्रभाव और स्वीकार्यता पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

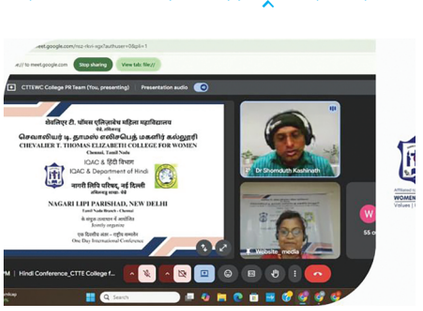

19 अगस्त, 2025 को चेन्नई स्थित शेवालिये टी. थॉमस एलिज़ाबेथ महिला महाविद्यालय में हिंदी विभाग और नागरी लिपि परिषद् के संयुक्त प्रयास से 'नागरी लिपि के वैश्विक प्रभाव और स्वीकार्यता' पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसमें ऑस्ट्रेलिया, मॉरीशस और नीदरलैंड सहित विभिन्न देशों से सहभागिता हुई। भारत के अनेक राज्यों से विद्वान और छात्र शामिल हुए।

कार्यक्रम का उद्घाटन हिंदी विभाग की सहायक प्राध्यापिका डॉ. ए. थस्लीम बानू द्वारा भावपूर्ण स्वागत के साथ हुआ। मुख्य वक्ताओं में डॉ. रामा तक्षक ने नीदरलैंड में हिंदी के ऐतिहासिक प्रसार और प्रवासी समुदायों द्वारा भाषा-संरक्षण के प्रयासों को साझा किया। डॉ. हरी सिंह पाल और डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन ने देवनागरी लिपि पर बात की। ऑस्ट्रेलिया से सुनीथा शर्मा ने प्रवासी साहित्य और डिजिटल माध्यमों से हिंदी के वैश्विक प्रसार की संभावनाओं पर विचार व्यक्त किए। डॉ. रश्मि चौबे ने लिपि के समावेशी उपयोग और दृष्टिहीन शिक्षार्थियों के लिए इसकी उपयोगिता पर बल दिया। श्री अजय कुमार ओझा ने पारिवारिक और साहित्यिक विरासत से जुड़े अनुभव साझा किए।

सम्मेलन में छात्रों द्वारा शोध-प्रस्तुतियाँ भी हुईं।

स्रोत : शेवालिये टी. थॉमस एलिज़ाबेथ महिला महाविद्यालय, चेन्नई की औपचारिक वेबसाइट - cttewc.edu.in

जापान में हिंदी कार्यशाला एवं सांस्कृतिक संवाद

21 जुलाई, 2025 को टोक्यो स्थित भारतीय दूतावास और विवेकानंद सांस्कृतिक केन्द्र के संयुक्त तत्त्वावधान में 'India i.e. Bharat 2025 : अमृतकाल का उत्सव' शीर्षक से सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन केंद्रीय संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, टोक्यो के एडोगावा नगर के मेयर ताकेशी सैतो और भारत के राजदूत सिबी जॉर्ज एवं उनकी पत्नी जोइस सिबी ने संयुक्त रूप से किया। मंत्री शेखावत ने कार्यक्रम को भारत और जापान के बीच बढ़ते संबंधों का प्रतीक बताते हुए इसे सांस्कृतिक समन्वय का उदाहरण बताया। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सांस्कृतिक दृष्टि 'विकास भी, विरासत भी' को दर्शाता है।

कार्यक्रम में 12 घंटे की लगातार प्रस्तुतियों का आयोजन किया गया। इसमें जापानी और भारतीय कलाकारों ने भारतीय शास्त्रीय नृत्य, संगीत और मार्शल आर्ट प्रस्तुत किए।

कार्यशाला के सत्रों में प्रतिभागियों को देवनागरी लिपि, उच्चारण और सरल वार्तालाप का प्रशिक्षण दिया गया। भाषा-खेलों और लघु नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से प्रतिभागियों ने हिंदी का व्यावहारिक प्रयोग समझा।

साभार : https://cijtoday.com एवं https://menafn.com

मुंशी प्रेमचंद और गोस्वामी तुलसीदास जयंती

31 जुलाई, 2025 को विद्या निवास साहित्य संस्था, सूरीनाम ने मुंशी प्रेमचंद और गोस्वामी तुलसीदास की जयंती का समारोह आयोजित किया। कार्यक्रम की शुरुआत जोती महादेवमिसीर ने की। कार्यक्रम के पहले भाग में मुंशी प्रेमचंद का जीवन-परिचय, जनवी जारबंदन ने दिया। सैंड्रा लोटावान ने उनकी साहित्यिक रुचियाँ तथा प्रहतिमा अजोदिया और उनके छात्रों ने उनकी कहानियों के अंश प्रस्तुत किए। प्रेमचंद की कहानी 'मुक्तिधान' पर एक लघु फ़िल्म भी प्रस्तुत की गई।

दूसरे भाग में गोस्वामी तुलसीदास का जीवन-परिचय, श्याम जानकी ने प्रस्तुत किया। नम्रता बोहोरी, साक्षी हीरा और श्रिया हीरा ने रामायण-पाठ और गीत-गायन किया। तुलसीदास पर एक डॉक्यूमेंट्री भी चलाया गया। कार्यक्रम के अंत में हिंदी परिषद् के अध्यक्ष ने उपस्थित मेहमानों को भगवद् गीता की एक प्रति भेंट करने की घोषणा की और सभी प्रतिभागियों को उनके योगदान के लिए सर्टिफ़िकेट प्रदान किए गए। जोती महादेवमिसीर ने कार्यक्रम का समापन किया।

श्री सत्यानंद प्रमसुख की रिपोर्ट

मॉस्को अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला 2025

दिनांक 3-7 सितंबर, 2025 को मॉस्को अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले में इस वर्ष भारत को अतिथि देश के रूप में आमंत्रित किया गया। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एनबीटी), भारत ने इस अवसर पर साहित्य, संस्कृति और शिक्षा पर आधारित विविध कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

पाँच दिनों का यह मेला बाल-साहित्य, डिजिटल प्रकाशन, योग, सिनेमा, भारतीय मिथक और भोजन सहित अनेक विषयों का केंद्र बना। साथ ही, लेखक-संवाद, काव्य-पाठ, फ़िल्म-प्रदर्शन, कर्नाटक शास्त्रीय गायन, ओडिसी नृत्य और राजस्थानी लोक संगीत ने दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया।

भारतीय लेखक एस.एन. पंडिता, अक्षत गुप्ता, जया मेहता, दीपक कुमार पांडा, आचार्य बालकृष्ण, अनिल ज़ंकर आदि ने अपने विचार साझा किए, जबकि रूसी साहित्यिक हस्तियों में व्लादिमीर टॉल्स्टॉय, इरीना मेलिखोवा और नीना कोचेल्याएवा प्रमुख रहे। रूस में भारत के राजदूत श्री विनय कुमार, एनबीटी के अध्यक्ष प्रो. मिलिंद मराठे और निदेशक श्री युवराज मलिक मेले में उपस्थित रहे।

इंडिया पवेलियन का मुख्य आकर्षण एनबीटी की 22 रूसी अनूदित पुस्तकें रहीं, जिनमें 'रवींद्रनाथ टैगोर : शिक्षा दर्शन और चित्रकला', 'युवाओं के लिए अरविंद', 'स्वामी विवेकानंद का सरल जीवन', 'गांधी का भारत : विविधता में एकता' और बाल पुस्तकों में 'लिटिल एलीफ़ेंट थ्रोज़ ए पार्टी' तथा 'लाखेन की कहानी' शामिल रहीं।

साभार : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की औपचारिक वेबसाइट

हिंदी महोत्सव 2025

कल्याण पश्चिम, महाराष्ट्र, भारत में 14 से 21 सितंबर, 2025 तक हिंदी साहित्य मण्डल द्वारा हिंदी महोत्सव आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. विजय नारायण पंडित की पुस्तक 'पानी के बुलबुले' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम के दौरान अंतरराष्ट्रीय कवि-सम्मेलन हुआ, जिसमें

ऑस्ट्रेलिया, नीदरलैंड्स, न्यूज़ीलैंड, पोलैंड, सिंगापुर, उज़्बेकिस्तान और भारत के कवियों ने भाग लिया। छात्रों के लिए काव्य-लेखन और सूक्ति-लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इसके अलावा आदिवासी साहित्य पर व्याख्यान और लघु शोध का प्रस्ताव तैयार करने पर कार्यशाला हुई। साथ ही, ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय परिसंवाद हुआ।

साभार : https://hindivibhaag.blogspot.com

सिंगापुर में इंडियन थिएटर फ़ेस्टिवल

28 से 30 अगस्त, 2025 तक भारतीय उच्चायोग, सिंगापुर द्वारा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सहयोग से इंडियन थिएटर फ़ेस्टिवल का आयोजन किया गया। इस महोत्सव में 'बाबूजी', 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' और 'ताजमहल का टेंडर' जैसे हिंदी नाटकों का मंचन हुआ। भारतीय उच्चायोग की पहल पर सिंगापुर के सिनेमाघरों में हिंदी फ़िल्मों का प्रदर्शन भी किया गया, जिससे हिंदी सिनेमा और भारतीय कथ्य को व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँच मिली।

आराधना झा श्रीवास्तव की रिपोर्ट

विश्व हिंदी न्यास की 25वीं वर्षगाँठ

6 सितंबर, 2025 को विश्व हिंदी न्यास, न्यू जर्सी की 25वीं वर्षगाँठ के अवसर पर कवि-सम्मेलन तथा हिंदी नाटक मंचन का भव्य आयोजन रॉयल अल्बर्ट पैलेस, न्यू जर्सी में हुआ। प्रयोग थिएटर ग्रुप द्वारा इस अवसर पर एक ज़बरदस्त और अनोखा हिंदी नाटक 'एक फ़ैसला ऐसा भी' प्रस्तुत किया गया, जिसमें एक विशेष सामाजिक संदेश दिया गया। नाटक के निर्देशक श्री अमीय मेहता एवं लेखक जया सरकार थे। अजीत सिंह, धनाश्री वैद्य, मेधा गुप्ता, मितल मोदी, मनीष चतुर्वेदी, उत्कर्ष दीक्षित एवं धनाश्री केलकर इस नाटक के कलाकार रहे। इसके अतिरिक्त नवरंग डांस एकेडमी और नटराज डांस एकेडमी द्वारा नृत्य-प्रस्तुति हुई। कवि-सम्मेलन भी हुआ, जिसमें श्री अनूप भार्गव, श्री अभिनव शुक्ला एवं डॉ. भुवन मोहिनी विशिष्ट अतिथि रहे।

साभार : प्रयोग थिएटर ग्रुप का फ़ेसबुक पेज

संस्कृति संस्थान मॉरीशस की नई पहल - कविता चौपाल

संस्कृति संस्थान मॉरीशस ने 20 सितंबर, 2025 को अपने नवीन साहित्यिक प्रकल्प 'कविता चौपाल' की शुरुआत एक अत्यंत आत्मीय और भावपूर्ण वातावरण में की। इस आयोजन में कविता-प्रेमियों का एक छोटा किंतु संवेदनशील समूह राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की अपनी प्रिय कविताओं के साथ कार्यक्रम में उपस्थित हुआ। इस विशेष अवसर पर मॉरीशस सरकार की माननीय सांसद डॉ. बबीता तानू की गरिमामयी उपस्थिति रही। मॉरीशस के जूनियर फ़ाइनेंस मिनिस्टर की पत्नी श्रीमती शिल्पा डामरी द्वारा कविता-पाठ प्रभावशाली रहा। विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव डॉ. शुभंकर मिश्र के काव्य-पाठ ने कार्यक्रम को यादगार बना दिया। इस आयोजन में हर श्रोता और वक्ता का योगदान अमूल्य रहा।

श्रीमती सविता तिवारी की रिपोर्ट

हिंदी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ़्रीका की जुलाई-सितंबर, 2025 की शैक्षणिक गतिविधियाँ

अगस्त 2025 में, हिंदी शिक्षा संघ परीक्षा के लिए पंजीकृत छात्रों के लिए मौखिक मूल्यांकन शुरू हुआ। शुरुआती स्तर को छोड़कर, सभी उम्मीदवारों को मौखिक परीक्षा देना अनिवार्य है, जो उनके अंतिम अंक का 20% है। यह पहल हिंदी में संवादात्मक दक्षता को बढ़ावा देने के प्रति संघ की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

सितंबर 2025 में, संघ द्वारा संचालित नौ कक्षाओं में से प्रत्येक के लिए परीक्षा कार्यशालाएँ आयोजित की गईं, जिसका उद्देश्य शिक्षकों और छात्रों दोनों को परीक्षा की प्रभावी तैयारी के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करना था।

आभार : हिंदी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ़्रीका

आभासी कार्यक्रम

i. हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि

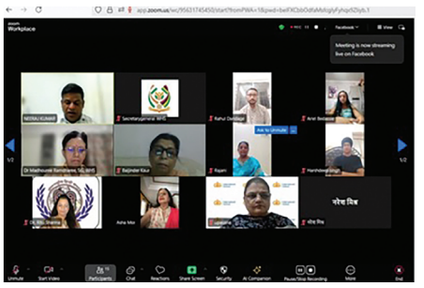

5 जुलाई, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने 'हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि - भाग 27' का आयोजन किया, जिसमें त्रिनिदाद से आरियल बिदेसी ने हरिशंकर आदेश की कविता 'जीवन और भावना' प्रस्तुत की। ईरान से हर्षदीप सिंह ने अपनी सभ्यता और संस्कृति को स्मरण रखने के महत्त्व पर प्रकाश डाला। राहुल गजानन दांडगे ने छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की काव्यगत विशेषताओं को रेखांकित करते हुए 'बाँधो न नाव इस ठाँव' कविता का गायन किया। होली नेम कॉन्वेंट स्कूल त्रिनिदाद की हिंदी शिक्षिका, श्रीमती आशा मोर ने हिंदी साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में प्रो. हरिशंकर आदेश के अतुलनीय योगदान पर अपना वक्तव्य दिया। केंद्रीय विद्यालय, तेहरान, ईरान से श्रीमती बलजिंदर कौर ने फ़ारसी सीखकर इसी भाषा उसके माध्यम से ईरान में बच्चों को हिंदी पढ़ाने का उल्लेख किया। फ़र्ग्युसन महाविद्यालय, पुणे, भारत की पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष, डॉ. रजनी रणपिसे ने हिंदी के अध्यापन में होने वाली समस्याओं की चर्चा की। हैदराबाद विश्वविद्यालय (भारत) से सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर, डॉ. शशि मुदिराज ने कहा कि साहित्य के प्रति अभिरुचि जगाने में सबसे बड़ी भूमिका शिक्षक की होती है। शिक्षक का सही मार्गदर्शन ही छात्रों को साहित्य के प्रति संवेदनशील बनाता है। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने कार्यक्रम के आरंभ में स्वागत-भाषण दिया। नीरज कुमार, पुस्कालय अधिकारी, विश्व हिंदी सचिवालय ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन, नीदरलैंड्स की अध्यक्षा, डॉ. ऋतु शर्मा ननन पांडे ने धन्यवाद-ज्ञापित किया।

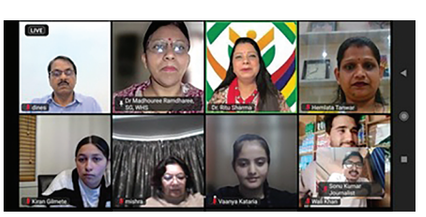

3 अगस्त, 2025 को आभासी मंच पर विश्व हिंदी सचिवालय का कार्यक्रम 'हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि - भाग 28' संपन्न हुआ। विश्व हिंदी

सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी औपचारिक स्वागत के उपरांत यू.ए.ई. से वाणीय कटारिया ने महादेवी वर्मा की कहानी 'गिल्लू' में जीव-जंतुओं के प्रति प्रेम की भावना पर बात की। अफ़गानिस्तान से इमरानुल्लाह ने सुदर्शन कुमार की कविता 'मेरा नया बचपन' का भावार्थ प्रस्तुत किया। न्यूज़ीलैंड से किरन गिलमेटी ने सुनीता नारायण की पुस्तक 'अक्रॉस द कालापानी' का संक्षिप्त परिचय दिया। दिल्ली प्राइवेट स्कूल, अजमान, यू.ए.ई की हिंदी अध्यापिका, श्रीमती हेमलता तंवर ने कहा कि हिंदी को इस प्रकार पढ़ाना चाहिए कि यह भाषा विद्यार्थियों के मन और भावनाओं को भी स्पर्श कर जाए। अफ़गानिस्तान के नांगरहार विश्वविद्यालय से सहायक प्रोफ़ेसर, मोहम्मद फ़िदा अल्कोजय ने कहा कि उनके देश में भाषा के अंतर को ध्यान में रखकर हिंदी भाषा पढ़ाने के लिए विशेष शैली अपनायी जाती है। साउथलैंड माईग्रेंट वॉकिंग टुगेदर ऑर्गनाइज़ेशन, न्यूज़ीलैंड की संस्थापिका, श्रीमती हिमानी मिश्रा ने गिरमिटिया साहित्य में सुनीता नारायण की भूमिका पर वक्तव्य दिया। अध्यक्षीय सम्बोधन में लेखक, कवि, अनुवादक एवं प्रख्यात आलोचनक, श्री दिनेश कुमार माली ने साहित्य को गिरमिटिया या प्रवासी साहित्य कहकर विभाजित न करने, बल्कि इसे सम्पूर्ण हिंदी साहित्य मानने का आग्रह किया। अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन की अध्यक्षा, डॉ. ऋतु शर्मा ननन पांडे ने कार्यक्रम का संचालन किया और धन्यवाद-ज्ञापन किया।

6 सितंबर, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय का कार्यक्रम 'हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि - भाग 29' सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने सभी विद्वतजनों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। तदुपरांत, मिज़ोरम से एम.एस. दोंगजुआली ने मुंशी प्रेमचंद की कहानियों में भारतीय समाज की ज्वलंत समस्याओं की विवेचना की। रूस से नवपुण्य नवीन ने महादेवी वर्मा की 'भक्तिन' कहानी की समीक्षा की। कनाडा से आशी पोरवाल ने महादेवी वर्मा की कहानी 'चिड़िया' का भावार्थ प्रस्तुत किया। गवर्नमेंट आइज़ोल कॉलिज, मिज़ोरम से डॉ. कैथी रोहलुपुई ने प्रारंभिक स्तर पर हिंदी सीखने वाले छात्रों की कठिनाइयों की चर्चा की। केंद्रीय विद्यालय, मास्को, रूस से धर्म सुता नवीन ने विद्यालय की प्रार्थना- सभा के अंतर्गत बच्चों द्वारा हिंदी में समाचार और सुविचार प्रस्तुत करने का उल्लेख किया। कनाडा से शिखा पोरवाल ने 'मनस्विनी कल्चरल सोसाइटी' की स्थापना, उद्देश्य और साहित्यिक गतिविधियों से अवगत कराया। अध्यक्षीय सम्बोधन में प्रो. अश्विनी कुमार शुक्ल ने हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति और उसके वैश्विक स्वरूप पर चर्चा करते हुए कहा कि आज भी यह चुनौती बनी हुई है कि हिंदी को विश्वभाषा का दर्जा कैसे दिलाया जाए। विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन की अध्यक्षा, डॉ. ऋतु शर्मा ननन पांडे ने मंच का का संचालन किया।

ii) हिंदी में अभिव्यक्ति

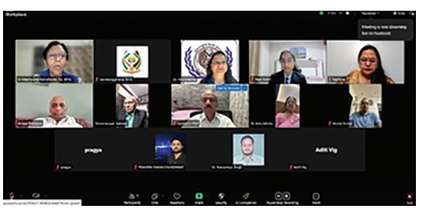

26 जुलाई, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने 'हिंदी में अभिव्यक्ति - भाग 27' आभासी कार्यक्रम का आयोजन किया। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने स्वागत वक्तव्य किया। कतर से पर्ल बिपिनचंद्र रोहित ने 'डर' विषय पर भावाभिव्यक्ति करते हुए कहा कि "डर हार नहीं है, बल्कि यह कुछ बड़ा करने का संकेत है।" अमेरिका से अदिति विग ने हिंदी सीखकर भारतीय संस्कृति, और साहित्य की समझ बढ़ाने की बात की। पोदार पर्ल स्कूल, दोहा, कतर से हिंदी शिक्षक, श्री प्रवीण सिंह चुंडावत ने गीतों के माध्यम से हिंदी व्याकरण सिखाने का अपना अनुभव साझा किया। ड्यूक विश्वविद्यालय, अमेरिका से हिंदी शिक्षिका, श्रीमती रचना श्रीवास्तव ने ब्लॉग्स और भारतीय-पाश्चात्य शिक्षण-पद्धतियों के समन्वय द्वारा हिंदी-शिक्षण को रोचक बनाने के उदाहरण दिए। श्रीमती पी. एन. दोशी महिला महाविद्यालय, मुंबई, भारत से सेवानिवृत्त मुख्य अध्यापिका, डॉ. आशा वीरेंद्र कुमार मिश्रा ने कहानियों, खेलों और मुहावरों द्वारा विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति-क्षमता विकसित करने की संभावना बतायी। शब्द साहित्यिक संस्था, बेंगलुरू, भारत के अध्यक्ष डॉ. श्रीनारायण समीर ने कहा कि कोई भी भाषा या तो परिचित होती है या अपरिचित। अर्थात् जिस भाषा के शब्दों से छात्र परिचित हैं उसी भाषा का वे सहज रूप में प्रयोग करते हैं। अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन, नीदरलैंड्स की अध्यक्षा, डॉ. ऋतु शर्मा ननन पांडे ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा आभार-ज्ञापन किया।

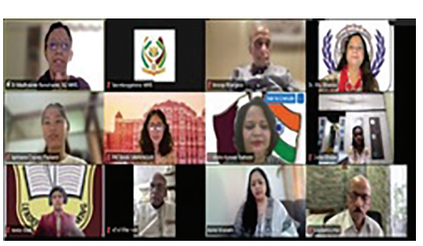

24 अगस्त, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित 'हिंदी में अभिव्यक्ति - भाग 28' की शुरुआत विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी के स्वागत वक्तव्य से हुई। तद्परांत यूएई से अब्दुल बारी ने 'आत्मविश्वास' विषय पर अपने भावों की अभिव्यक्ति की। कतर से हुमैरा आरिफ़ खालपा ने झांसी की रानी के बलिदान का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत दिया। थाइलैंड से अभिसरा जयरत ने हिंदी के प्रति अपनी जागरूकता दर्शायी। लीडर्स प्राइवेट स्कूल, यूएई से हिंदी विभागाध्यक्ष, सुश्री आयशा खानम ने दक्षिण भारतीय बच्चों को हिंदी सिखाने की चुनौतियों पर बात की। कतर के पोदार इंटरनेशनल स्कूल से हिंदी शिक्षिका, सुश्री विनीता कंवर राठौड़ ने कहा कि हिंदी की पढ़ाई को नीरसता से दूर करने के लिए सामूहिक गतिविधियाँ आयोजित करने के उदाहण दिए। थाइलैंड के चियांगमाई विश्वविद्यालय से हिंदी व्याख्याता, डॉ. पद्मा सवांगश्री ने थाइलैंड में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार पर वक्तव्य दिया। अध्यक्षीय संबोधन में नागरी लिपि परिषद्, भारत के महामंत्री, डॉ. हरिसिंह पाल ने 'वसुधैव कुटुंबकम' का उदाहरण देते हुए विश्व बंधुत्व, सहिष्णुता और मानवता के मूल्यों को आगे बढ़ाने का संदेश दिया। अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन, नीदरलैंड्स की अध्यक्षा, डॉ. ऋतु शर्मा नंनन पांडे ने मंच का संचालन करते हुए अंत में धन्यवाद-ज्ञापन किया।

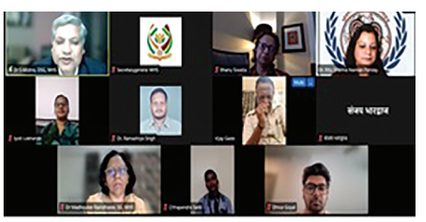

27 सितंबर, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने हिंदी में अभिव्यक्ति के 29वें संस्करण का आयोजन किया, जिसकी शुरुआत विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी के स्वागत-वक्तव्य से हुई। भारत से छपेंद्र हर्कबहादुर सार्की ने वृक्षारोपण के महत्त्व पर प्रकाश डाला। अमेरिका से ध्रुव गोयल ने बताया कि हिंदी न केवल शिक्षा की भाषा है, बल्कि संपर्क और संवाद की भी भाषा है। सिराक्यूज़ विश्वविद्यालय, अमेरिका की हिंदी व्याख्याता, भानुश्री सिसोदिया ने उल्लेख किया कि अमेरिका में हिंदी पढ़ाने वाले शिक्षक गीत और कहानी के माध्यम से बच्चों को भाषा और संस्कृति से जोड़ते हैं। भारत से हिंदी अध्यापिका, सुश्री ज्योति महेश लोखंडे ने बताया कि वे बच्चों को मुख्य रूप से लेखन और वाचन के अभ्यास द्वारा हिंदी सिखाती हैं। अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. विजय महादेव गाडे ने हिंदी-शिक्षण को आधुनिक बनाने पर ज़ोर देते हुए कहा कि भाषा-शिक्षण में छात्रों का आत्मविश्वास कम होना एक बड़ी चुनौती है, जिसे दूर करना आवश्यक है। अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन

की अध्यक्षा, डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पांडे ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने धन्यवाद-ज्ञापित किया।

('हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि' तथा 'हिंदी में अभिव्यक्ति' आभासी कार्यक्रमों के सभी संस्करण विश्व हिंदी सचिवालय के औपचारिक यूट्यूब चैनल: https://www.youtube.com/@worldhindisecretariat पर उपलब्ध हैं।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

साक्षात्कार

28 जुलाई, 2025 को ' 'यादों की रियासत' पुस्तक के लोकार्पण' विषय पर 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम प्रसारित हुआ। इस कार्यक्रम के अतिथि भारत से आईं डॉ. अंजना सिंह सेंगर रहीं। डॉ. अंजना सिंह सेंगर ने गज़ल में उच्चारण के महत्त्व को रेखांकित करते हुए बताया कि कबीरदास की पंक्तियाँ - "हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या.." और "रहे आज़ाद या जग से हमन, दुनिया से यारी क्या" गज़ल के बहुत सुंदर उदाहरण हैं। गज़ल को प्रारंभ में प्रेम की अभिव्यक्ति का माध्यम माना जाता था, किन्तु समय के साथ इसकी विषयवस्तु व्यापक होती गई। दुष्यंत कुमार जैसे महान् कवियों ने हिंदी गज़ल को नया आयाम दिया तथा सामाजिक यथार्थ को स्वर प्रदान किया, जिसके परिणामस्वरूप हिंदी गज़ल ने प्रेम की सीमित परिधि से निकलकर संवेदनाओं व संघर्षों का व्यापक संसार रचा। अपनी पुस्तक 'यादों की रियासत' के संबंध में उन्होंने बताया कि इस कृति में प्रेम, सामाजिक विसंगतियों तथा व्यक्तिगत भावनाओं पर आधारित गज़लें संग्रहित हैं। उनकी मान्यता है कि गज़ल केवल एक साहित्यिक धारा नहीं, बल्कि संवेदनाओं का समंदर है और इसमें जो डूबेगा, वही मोती पाएगा। इस साक्षात्कार के लिए डॉ. शशि दुकन ने डॉ. अंजना सिंह सेंगर के प्रति आभार प्रदर्शित किया।

11 अगस्त, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय के 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम में भारत से आए प्रोफ़ेसर संतोष रविदास का साक्षात्कार लिया गया। प्रो. संतोष रविदास ने कहा कि भाषा मनुष्य को सभ्य और समृद्ध बनाती है। हिंदी अपनी सरलता, मधुरता एवं शिष्टता के कारण जनसंचार, प्रशासन और शिक्षा में लगातार प्रगतिशील बनी हुई है। आधुनिक युग में हिंदी में लगातार नए प्रयोग हो रहे हैं, जिसके कारण यह भाषा वैज्ञानिक रूप से सुसज्जित हुई है और आधुनिकता को स्पष्ट किया। अंत में, उन्होंने भारतेंदु हरिश्चंद्र की प्रसिद्ध पंक्तियाँ - "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा-ज्ञान के, मितट न हिय को सूल।" उद्धृत कीं, जो हिंदी के महत्त्व को अधिक स्पष्ट करती हैं। श्री धनराज शंभु ने इस साक्षात्कार के लिए प्रोफ़ेसर संतोष रविदास को धन्यवाद-ज्ञापित किया।

25 अगस्त, 2025 को 'हिंदी का प्रचार-प्रसार' विषय पर 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम प्रसारित हुआ। अंतरराष्ट्रीय कवि-सम्मेलन के लिए केन्या से मॉरीशस पधारे, श्री अभिजीत गुप्ता इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे। श्री अभिजीत गुप्ता केन्या भारती सेंटर, रोटेरी क्लब, जाइन्स क्लब और यूनाइट एजिन नेटवर्क जैसे सामाजिक संगठनों से जुड़े हैं तथा नैरोबी में कई गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। उन्होंने बताया कि विश्व हिंदी सचिवालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय कवि-सम्मेलन में भाग लेना उनके लिए एक अद्भुत अनुभव रहा। विभिन्न देशों के कवियों, विशेषकर मॉरीशस के कवियों की उपस्थिति ने उन्हें गहराई से प्रभावित किया। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में युवा पीढ़ी की भागीदारी देखकर वे मोहित हुए। रेडियो मुम्बासा पर प्रसारित अपने लोकप्रिय कार्यक्रम 'चलते-चलाते' के माध्यम से श्री अभिजीत गुप्ता हिंदी गीत, कविताएँ और लोकसंवाद श्रोताओं तक पहुँचा रहे हैं। उनका मुख्य उद्देश्य हिंदी को सरल और सहज रूप में प्रस्तुत करना है, ताकि अधिक-से-अधिक लोग इससे जुड़ सकें और इसे अपना सकें। श्री अभिजीत गुप्ता पेशे से इंजीनियर हैं, लेकिन उनका मानना है कि हर व्यक्ति के जीवन में कोई कला या शौक छिपा होता है और इसका विकास करना जीवन का परम कर्तव्य है। श्रीमती अश्विना देवी हेमू ने इस साक्षात्कार के लिए श्री अभिजीत गुप्ता के प्रति आभार प्रदर्शित किया।

8 सितंबर, 2025 को 'कैलिफ़ोर्निया में हिंदी की स्थिति' विषय पर 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम प्रसारित किया गया। इस कार्यक्रम में अमेरिका से श्रीमती रचना श्रीवास्तव से बातचीत की गई। वे 'न्यू हिन्दू फ़ाउंडेशन' की संयोजक होने के साथ-साथ माध्यमिक विद्यालय में हिंदी की शिक्षिका हैं। वे मंदिरों में भी बच्चों को हिंदी पढ़ाती हैं तथा नाट्य-प्रस्तुति और पहेलियों के माध्यम से हिंदी भाषा का ज्ञान कराती हैं। उनके अनुसार रचनात्मक गतिविधियों से बच्चों में हिंदी सीखने की उत्सुकता बढ़ती है। 'आओ हिंदी पढ़ें' नामक पुस्तक श्रीमती रचना श्रीवास्तव की रचना है, जिसमें अत्यंत सरल भाषा में छोटे-छोटे निबंध संकलित हैं। ये निबंध न केवल भारतीय संस्कृति पर आधारित हैं, बल्कि इनमें अन्य देशों से संबंधित विषय भी शामिल हैं। वे बच्चों के लिए सामान्य-ज्ञान से संबंधित प्रतियोगिताएँ भी आयोजित करती हैं, जिनके परिणामस्वरूप हिंदी बोलने में बच्चों का आत्मविश्वास विकसित होता है। श्रीमती रचना श्रीवास्तव गानों के माध्यम से बच्चों में हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में रुचि पैदा करती हैं। वे गानों का अंग्रेज़ी में अनुवाद प्रस्तुत करती हैं और कठिन शब्दों का भी अनुवाद कर बच्चों की शब्दावली में वृद्धि करती हैं। उनका यह मानना है कि इस प्रकार के कार्यक्रम से बच्चे न केवल हिंदी सीखने के लिए प्रेरित होते हैं, बल्कि उन्हें भारतीय संस्कृति से जुड़ने का भी अवसर मिलता है। श्रीमती कल्पना लालजी ने इसस साक्षात्कार के लिए श्रीमती रचना श्रीवास्तव को धन्यवाद-ज्ञापित किया।

(विभिन्न देशों के हिंदी विद्वानों के साक्षात्कार विश्व हिंदी सचिवालय की औपचारिक वेबसाइट https://vishwahindi.com/new/# के 'ओडिओ' भाग पर उपलब्ध है।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

लोकार्पण

'मॉरीशस की साहित्यिक सुगंध' का लोकार्पण

31 जुलाई, 2025 को तुलसी जयंती के अवसर पर मॉरीशस स्थित रामायण सेंटर में 'मॉरीशस की साहित्यिक सुगंध' पुस्तक का लोकार्पण संपन्न हुआ। यह पुस्तक मॉरीशस के 40 से अधिक रचनाकारों की 64 रचनाओं का संकलन है, जिसमें कविता, कहानी, लघुकथा, संस्मरण, निबंध, शोध लेख आदि शामिल हैं। श्रीमती सुनीता पाहूजा तथा मॉरीशस में हिंदी लेखिका श्रीमती अंजु घरभरन द्वारा सह-संपादित इस पुस्तक का लोकार्पण मॉरीशस गणराज्य के कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय श्री महेंद्र गोंदिआ, मॉरीशस में भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अनुराग श्रीवास्तव तथा रामायण सेंटर की अध्यक्षा डॉ. विनोद बाला अरुण के कर-कमलों द्वारा किया गया। माननीय मंत्री ने कहा कि यह साहित्यिक कृति एक सांस्कृतिक प्रस्तुति है। महामहिम श्री अनुराग श्रीवास्तव ने आशा व्यक्त की कि मॉरीशस की साहित्यिक सुगंध विश्व भर में फैले। डॉ. विनोद बाला अरुण ने विचार व्यक्त किया कि श्रीमती सुनीता पाहूजा ने भारत और मॉरीशस की संस्कृति को जोड़ने का कार्य किया है।

साभार : श्रीमती सुनीता पाहूजा का फ़ेसबुक

कुलाधिपति श्री संतोष चौबे के कहानी-संग्रह 'गरीबनवाज़' का लोकार्पण

4 सितंबर, 2025 को दिल्ली में साहित्य अकादेमी के सभागार में वरिष्ठ कवि, कथाकार और रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री संतोष चौबे के नवीन कहानी-संग्रह 'गरीबनवाज़' का लोकार्पण वनमाली सृजन पीठ, दिल्ली और राजकमल प्रकाशन समूह के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित हुआ। सुप्रसिद्ध कथाकार ममता कालिया की उपस्थिति में और वरिष्ठ साहित्यकार जानकी प्रसाद शर्मा की अध्यक्षता में विमोचन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में श्री चौबे ने संग्रह से 'शीर्षक' कहानी का पाठ करते हुए अपनी रचना-प्रक्रिया पर बात की। ममता कालिया ने कहा कि संतोष चौबे सामाजिक सरोकारों को केंद्र में रखकर लिखते हैं। अध्यक्षीय वक्तव्य में जानकी प्रसाद शर्मा ने कहानियों की पठनीयता पर प्रकाश डाला। वरिष्ठ आलोचक अखिलेश ने कहा कि ये कहानियाँ नए कथानुशासन का निर्माण करती हैं। विनोद तिवारी ने इन कहानियों में प्रेम, करुणा और मानवता की चर्चा की। कथाकार अल्पना मिश्र ने कहानियों के आत्मीय वातावरण पर विचार प्रस्तुत किए और युवा कथाकार आशुतोष ने कहानीकार की वैज्ञानिक दृष्टि को रेखांकित किया। समारोह में स्वागत-उद्बोधन लीलाधर मंडलोई ने दिया और संचालन प्रांजल धर व कुणाल सिंह ने किया। आभार राजकमल प्रकाशन समूह के अशोक माहेश्वरी ने व्यक्त किया।

साभार : itdcnews.com

'हिंदी दोहा समीक्षक' सॉफ़्टवेयर का लोकार्पण

भारत के वाणिज्यदूत डॉ. मदन मोहन सेठी ने 14 सितंबर, 2025 को ऑकलैंड में आयोजित हिंदी उत्सव में 'भारत-दर्शन' द्वारा विकसित 'दोहा समीक्षक' सॉफ़्टवेयर का लोकार्पण किया। उन्होंने 'दोहा समीक्षक' को हिंदी साहित्य के लिए उपयोगी पहल बताया। यह टूल विशेष रूप से उन रचनाकारों के लिए मील का पत्थर साबित हो रहा है, जो दोहा-लेखन की बारीकियों और उसके शिल्प को समझना चाहते हैं। यह 'दोहा समीक्षक' यंत्र न केवल दोहे की

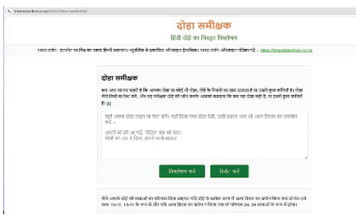

मात्राओं की गणना करता है, बल्कि उसके संपूर्ण शिल्प-विधान का सूक्ष्म विश्लेषण भी प्रस्तुत करता है। 'भारत-दर्शन' के संपादक रोहित कुमार 'हैप्पी' के अनुसार, "हमारा प्रयास है कि हम उच्च स्तरीय साहित्य को बढ़ावा दें और लुप्त होती जा रही हिंदी विधाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से जीवित रखें।"

दोहा समीक्षक' सॉफ़्टवेयर का लिंक : https://bharatdarshan.co.nz/tools/doha-samikshak/

दोहा समीक्षक के अलावा, 'भारत-दर्शन' ने हाइकु, तांका, सेदोका और चोका जैसे जापानी काव्य-रूपों के लिए भी 'गणक' उपलब्ध कराए हैं।

श्री रोहित कुमार 'हैप्पी', editor@bharatdarshan.co.nz

सम्मान एवं पुरस्कार

सिंगापुर में 'हिंदी उत्कृष्टता सम्मान समारोह'

16 सितंबर, 2025 को हिंदी दिवस की पूर्व संध्या पर ग्लोबल हिंदी फ़ाउंडेशन, सिंगापुर द्वारा आयोजित विशेष कार्यक्रम में हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सिद्ध संगीतकार और फ़िल्म निर्देशक विशाल भारद्वाज एवं उनकी धर्मपत्नी रेखा भारद्वाज को 'हिंदी उत्कृष्टता सम्मान' से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अवसर पर उन्हें 'सिंगापुर नव रस' की प्रति भेंट की गई, जो सिंगापुर से प्रकाशित पहली हिंदी कविता-संग्रह है। यह संग्रह हिंदी-साहित्य के वैश्विक प्रसार और प्रवासी समुदायों में हिंदी संस्कृति के संवर्धन की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अद्वैत इवेंट्स, सिंगापुर की जिन्नी नेवटिया का विशेष योगदान रहा। उन्होंने कार्यक्रम में इन महान् व्यक्तित्वों को आमंत्रित कर दर्शकों के लिए एक ऐतिहासिक अनुभव सुनिश्चित किया और हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी उत्कृष्टता के संदेश को सिंगापुर में सशक्त रूप से प्रस्तुत किया।

साभार : ग्लोबल हिंदी फ़ाउंडेशन, सिंगापुर का फ़ेसबुक पेज

त्रिवेणी मंदिर, कनाडा में 'साहित्य सृजन सम्मान-2025'

ब्रैम्पटन स्थित त्रिवेणी मंदिर में 13 सितंबर, 2025 को हिंदी राइटर्स गिल्ड कनाडा द्वारा 'साहित्य सृजन सम्मान-2025' का आयोजन गरिमामयी वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के उद्घाटन में गिल्ड की संस्थापक निदेशिका डॉ. शैलजा सक्सेना ने मुख्य अतिथि चांसरी प्रमुख, श्री संजीव सकलानी और उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. सक्सेना ने कवि एवं निबंधकार डॉ. अग्निशेखर और 'दर्दपुर' की लेखिका डॉ. क्षमा कौल का परिचय देते हुए बताया कि इनकी लेखनी ने कश्मीरी पंडितों के विस्थापन की पीड़ा को वैश्विक स्तर पर उजागर किया है। मुख्य अतिथि श्री संजीव सकलानी ने दोनों साहित्यकारों को स्मृति-चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। डॉ. क्षमा कौल ने कश्मीरी पंडितों की वेदना को भावपूर्ण ढंग से साझा किया, जबकि डॉ. अग्निशेखर ने अपने समुदाय के संघर्षों को प्रभावशाली शैली में प्रस्तुत किया। सत्र का संचालन निदेशक विद्या भूषण धर ने किया। इसमें महेंद्र भंडारी और मुरारीलाल थपलियाल ने भी स्मृति-चिह्न प्रदान किए। गिल्ड के सदस्यों और अन्य अतिथियों ने दोनों रचनाकारों की रचनाओं का पाठ और उनके साहित्यिक योगदान की प्रशंसा की। वरिष्ठ संस्थापक निदेशक विक्रांत ने धन्यवाद-ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन किया।

साभार : हिंदी राइटर्स गिल्ड, कनाडा का फ़ेसबुक पेज

फ़िजी में सम्मान कार्यक्रम 2025

हिंदी परिषद् फ़िजी - पश्चिमी शाखा ने भारतीय उच्चायोग, सुवा तथा गिरमिट बहुसांस्कृतिक केंद्र के सहयोग से शनिवार, 19 जुलाई, 2025 को लौटोका में सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर हिंदी-अध्ययन में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों का सम्मान किया गया।

मुख्य अतिथि श्री ईश्वर सिंह यादव, द्वितीय सचिव (हिंदी), भारतीय उच्चायोग, सुवा ने अपने मुख्य उद्बोधन में विद्यार्थियों की हिंदी भाषा के प्रति समर्पण की सराहना की। शिक्षा मंत्रालय के पाठ्यक्रम परामर्श सेवा (हिंदी) से सुश्री श्यामला चंद ने भी अपने विचार व्यक्त किए और फ़िजी में हिंदी शिक्षा के समर्थन हेतु परिषद् के निरंतर प्रयासों की सराहना की।

हिंदी में उच्च उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों को नकद राशि, ट्रॉफ़ी, प्रमाण-पत्र तथा पुस्तकें प्रदान की गईं। पुरस्कार प्राप्त कुछ विद्यार्थियों ने भावपूर्ण वक्तव्य देते हुए सम्मान के लिए आभार व्यक्त किया और हिंदी अध्ययन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

आभार : डॉ. सुभाषिणी कुमार, सचिव, हिंदी परिषद् फ़िजी - पश्चिमी शाखा एवं श्री नरेश चंद, अध्यक्ष, हिंदी परिषद् फ़िजी - पश्चिमी शाखा

हिंदी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ़्रीका की वार्षिक बैठक एवं सम्मान समारोह

23 अगस्त, 2025 को हिंदी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ़्रीका ने अपनी वार्षिक आम बैठक आयोजित की, जिसमें 28 हिंदी शिक्षकों को सम्मानित किया गया। इन शिक्षकों ने मॉरीशस के महात्मा गांधी संस्थान के सहयोग से आयोजित 15 सप्ताह के क्षमता-निर्माण पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा किया। यह कार्यक्रम दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी-शिक्षण के विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण माध्यम बन गया है। इस पाठ्यक्रम में 'अभिविन्यास', 'भाषा-शिक्षण के दृष्टिकोण और रणनीतियाँ', 'ध्वनि-विज्ञान : छात्रों के उच्चारण में सुधार करना', 'कक्षा में संचार को बेहतर बनाना', 'व्याकरण का शिक्षण', 'साहित्य अध्यापन की विधियाँ और रणनीतियाँ', 'आकलन और मूल्यांकन', 'उपचारात्मक शिक्षण' तथा 'शिक्षण उपकरण और सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ITC)' विषय सम्मिलित थे।

इस पाठ्यक्रम में भाग लेने वाले हिंदी शिक्षा संघ के 28 शिक्षक अतवारू यकीन, बेनीदीन रेखा, वशिष्ठमुनि धनलाल निक्षा, फूलचंद अश्मिका, हनुमान ओशनी देवी, हरिकरण होली, हरिकरण ऊषा देवी, हरिकरण ज्ञानदेव मंजिल, खान ज़ैन, लालदेव निशानी, लेखराम प्रणीता, लक्ष्मण राजेश, मदारी देविका, महाराज कविशा, महाराज नलिनी, महाराज ओमेलिया, महाराज शैली, मोतीलाल रनीशा, फ़िलिप शारदा रानी, रामबली आराधना, रामबली मालती, रामचंद्र माला, राममनोहर निरुपा, रामरतन नलिनी, सर्जू कांति देवी, सीतल बासमती, सिंग सनम एवं सुदू सैंड्रा थे।

आभार : हिंदी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ़्रीका

श्रद्धांजलि

डॉ. सीतेश आलोक

16 सितंबर, 2025 को नोएडा में प्रख्यात साहित्यकार डॉ. सीतेश आलोक का स्वर्गवास हो गया। डॉ. सीतेश आलोक गृहस्थ के बाने में तपस्वी जैसा ही जीवन जीते थे। राजनीतिक गलियारों ने उन्हें कभी आकर्षित नहीं किया। वे अलग मिट्टी के बने थे। साहित्य तो उनके रक्त में था। डॉ. सीतेश आलोक ने गीता और रामायण को सही अर्थों में अपने जीवन में उतारा था। इन ग्रंथों के आधार पर उन्होंने संक्षिप्त रामायण और गीता का भावार्थ लिखा। महाभारत के आधार पर उन्होंने 'महागाथा' पुस्तक लिखी। वे घर में संगीतकारों एवं साहित्यकारों के लिए मासिक गोष्ठी करते थे, जिसमें देश के नामचीन रचनाकर्मी भाग लेते थे। वे साहित्य, संस्कृति और कला की अंग्रेज़ी त्रैमासिकी 'प्रतिभा इंडिया' के संपादक थे। दूरदर्शन एवं आकाशवाणी पर उनके अनेक कार्यक्रम प्रसारित हुए हैं। नाट्य-लेखन, निर्देशन एवं अभिनय में भी उनका योगदान रहा है।

'ढेंगती हुई शाम', 'अंधा सवेरा', 'नासमझ', 'तुम कहो तो', 'मुहिम', 'आधारशिला' (कहानी-संग्रह); 'कैसे-कैसे लोग', 'विचित्र' (लघुकथा-संग्रह), 'बच गया आकाश', 'यथा संभव', 'बाज़ार में गुड़िया' (कविता-संग्रह), 'गाते गुनगुनाते' (गीत), 'छोटा-सा सपना' (गज़ल), 'सूरज की छुट्टी' (बालगीत), 'महागाथा' (उपन्यास), 'चंदर का सुख', 'तपस्या', 'सोने की टिकिया' (बालकथा-संग्रह), 'परनिंदा परम सुखम्' (व्यंग्य-संग्रह), 'लिबर्टी के देश में' (यात्रावृत्तांत), 'रामायण-पात्र परिचय' (शोध संहिता), 'चलती चक्की' (सामयिक लेख) आदि उनकी रचनाएँ हैं।

वे 'साहित्यकार सम्मान', 'कृति सम्मान', 'साहित्य सेवी सम्मान', 'राष्ट्रीय हिंदी-सेवी सम्मान', 'अनुशंसा पुरस्कार', 'साहित्य-भूषण', 'मानस संगम साहित्य पुरस्कार', 'साहित्यिक कृति सम्मान', 'अक्षरम् साहित्य सम्मान', 'हीरालाल शुक्ल साहित्य सम्मान' और 'सूर्या साहित्य सम्मान' से अलंकृत हुए हैं।

प्रभात प्रकाशन एवं पाञ्चजन्य से साभार

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि।

प्रधान संपादक	: डॉ. माधुरी रामधारी	फ़ोन	: (230) 660 0800
संपादक	: डॉ. शुभंकर मिश्र	ई-मेल	: info@vishwahindi.com
वरिष्ठ सहायक संपादक	: श्री प्रकाश वीर	वेबसाइट	: www.vishwahindi.com
सहायक संपादक	: श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी	डेटाबेस	: www.vishwahindidb.com
पता	: विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius	फ़ेसबुक	: www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/

संपादकीय

विदेशियों द्वारा अपनी मातृभाषा में हिंदी साहित्य का अनुवाद

हिंदी भाषा में गहरी रुचि रखते हुए विदेशी लोग हिंदी साहित्य को भारी महत्त्व देते रहे हैं। अपनी मातृभाषा में हिंदी साहित्य का अनुवाद करने का उनका प्रयास बहुत लंबे समय से चलता आ रहा है। 17वीं और 18वीं शताब्दियों में भारतीय संस्कृति और साहित्य के प्रति आकर्षित होने पर विदेशियों ने जहाँ संस्कृत भाषा में विरचित वेद, रामायण, महाभारत, गीता आदि ग्रंथों का अनुवाद करने का सुंदर प्रयास किया, वहीं 19वीं शताब्दी में उनका ध्यान विशेषत: हिंदी साहित्य की ओर मुड़ा और इसका अध्ययन करते हुए वे अपनी मातृभाषा में हिंदी की रचनाओं को अनूदित करने की ओर प्रवृत्त हुए। विश्व के कई देशों में विदेशी अपनी-अपनी भाषा में हिंदी साहित्य का सफल अनुवाद कर रहे हैं।

वर्तमान समय में, हिंदी की अनगिनत रचनाएँ विदेशी भाषाओं में उपलब्ध हैं, जिन्हें विदेशी पाठक बड़े चाव से पढ़ते हैं। नॉर्वे के संदर्भ में श्री अमित जोशी लिखते हैं -

"भारतीय साहित्य, विशेषकर हिंदी साहित्य का नॉर्वेजियन में अनुवाद का कार्य आगे बढ़ रहा है। लगभग तीस साल पहले नॉर्वेजियन के अग्रणी कवि स्व. पॉल ब्राखे ने हिंदी कविताओं का अँग्रेज़ी माध्यम से नॉर्वेजियन अनुवाद पुस्तक रूप में प्रकाशित किया था, जिसमें अज्ञेय, मुक्तिबोध, धर्मवीर भारती, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, रघुवीर सहाय, गिरिजा कुमार माथुर आदि की प्रतिनिधि कविताएँ थीं।"

इसी प्रकार रूस में हिंदी साहित्य के अनुवाद के संबंध में डॉ. मदनलाल मधु लिखते हैं -

"हिंदी साहित्य का रूसी भाषा में पर्याप्त अनुवाद हुआ है। विद्यापति, जायसी, सूरदास, तुलसीदास, कबीर, रसखान, मीराबाई तथा आधुनिक काल के भारतेंदु, जयशंकर प्रसाद, निराला, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, मुक्तिबोध, शिवमंगलसिंह सुमन, अज्ञेय, बच्चन आदि के काव्य से रूसियों को परिचित होने का अवसर मिला है। इसी प्रकार गद्य के क्षेत्र में मुंशी प्रेमचंद के लगभग सभी सुपरिचित उपन्यासों, कहानियों और यशपाल, अमृतलाल नागर, विष्णु प्रभाकर, अमृतराय, कमलेश्वर, मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी, जैनेन्द्रकुमार तथा भीष्म साहनी आदि के उपन्यासों और कहानियों का अनुवाद हो चुका है। हिंदी भाषा का अच्छा ज्ञान रखने वाले अनुवादकों ने उक्त कवियों, लेखकों की रचनाओं को रूसी पाठकों तक पहुँचाया है।"

पाकिस्तान में पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी रचनाओं का अनुवाद पाठकों तक पहुँचाया जाता है। प्रो. माजदा असद का कहना है-

"पत्र-पत्रिकाएँ हिंदी की अच्छी रचनाओं का अनुवाद कराकर प्रकाशित कराती रही हैं। इस तरह पाकिस्तान की जनता का संबंध हिंदी से लगातार बना रहा है। कमलेश्वर का हिंदी उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' का अनुवाद वहाँ हो चुका है। वहाँ की जनता ने इस रचना को बहुत पसंद किया।"

भारत से बाहर अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी साहित्य पढ़ाया जाता है। विदेशी प्राध्यापक अक्सर विद्यार्थियों की अपनी भाषा में हिंदी साहित्य का अनुवाद करके उन्हें साहित्य-पठन की प्रेरणा देते हैं। अपनी भाषा में हिंदी रचनाओं को गहराई से समझ लेने के बाद, जब विद्यार्थी मूल भाषा में इनका अध्ययन करते हैं, तब वे इनका अधिक आनंद उठाते हैं। विश्वविद्यालयों में हुए हिंदी साहित्य के अनुवाद के अनेक सुंदर उदाहरण दृष्टिगत होते हैं। चेक गणराज्य के चार्ल्स विश्वविद्यालय में डॉ. डैग्मर मार्कोवा ने हिंदी की अनेक प्रसिद्ध लघुकथाओं का और तीन उपन्यासों का चेक भाषा में अनुवाद किया। जर्मनी में हाइडेलबर्ग विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. लोथर लुत्से ने आधुनिक हिंदी कविता का अनुवाद किया और माइन्त्स लेल विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर डॉ. कोनार्द मेसिग ने यशपाल की कहानियों का अनुवाद किया। इनालको, फ़्रांस के हिंदी विभाग की भूतपूर्व प्रमुख, श्रीमती आनी मोंतो ने कृष्ण बलदेव वैद और निर्मल वर्मा के हिंदी उपन्यासों का फ़्रांसीसी भाषा में अनुवाद किया। पोलैंड के वारसा विश्वविद्यालय में एक ओर डॉ. रूत्कोव्स्का और श्रीमती कार्लिकोव्स्का ने आधुनिक हिंदी कहानियों का पोलिश अनुवाद किया, तो दूसरी ओर प्रो. बूस्की ने डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक 'तोता-मैना' और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के 'बकरी' को पोलिश में अनूदित किया। इसी प्रकार चीन के पेइचिंग विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर चिंतन हान ने 'रामचरितमानस' का चीनी भाषा में अनुवाद किया। इटली के मिलान विश्वविद्यालय की हिंदी प्रोफ़ेसर डोलचीनी ने 'रानी केतकी की कहानी' और वेनिस विश्वविद्यालय से चेचिलिया कोसिनो ने रेणु के उपन्यास 'मैला आँचल' का इटालियन अनुवाद किया। बल्गारिया के सोफ़िया विश्वविद्यालय की प्रवक्ता वाल्या मारिनोवा द्वारा हुए अनुवाद के विषय में डॉ. सत्यकाम लिखते हैं -

"मारिनोवा जी के नेतृत्व में हिंदी के जिन प्रमुख उपन्यासों का अनुवाद हुआ, वे हैं प्रेमचंद का 'गोदान', जैनेन्द्र का 'सुनीता', अज्ञेय का 'शेखर : एक जीवनी', कृष्ण चंदर का 'ददर पुल के बच्चे'। कहानी-संग्रहों में हैं: कमलेश्वर का 'नीली झील और अन्य कहानियाँ', निर्मल वर्मा का 'परिंदे और अन्य कहानियाँ'। कहानीकार जिनकी कहानियाँ अलग-अलग संग्रहों में प्रकाशित हुई हैं, वे हैं: अज्ञेय, अमरकांत, अमृता प्रीतम, अनीता देसाई, अश्विनी, बल्लभ दोभाल, भीष्म साहनी, गंगा प्रसाद विमल, गौतम सन्याल, जैनेन्द्र कुमार, जयशंकर प्रसाद ... आदि। बल्गेरियाई भाषा में हिंदी पढ़ने वाले शिक्षक मुख्य तौर पर शिक्षण के लिए अनुवाद का सहारा लेते हैं और इन सभी उपन्यासों और कहानियों का अनुवाद भी उसी प्रयास का नतीजा है। ये सारे अनुवाद विद्यार्थियों और शिक्षकों ने मिलकर किए हैं। इस प्रकार हिंदी साहित्य लगातार बल्गारिया में अनुवाद के माध्यम से फैलता जा रहा है।"

यह हर्ष का विषय है कि विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ने वाले छात्र भी अपने प्राध्यापकों की प्रेरणा से साहित्यानुवाद में संलग्न होते हैं। हंगरी के एलते विश्वविद्यालय की प्रवक्ता सुश्री मारिया नेज्यैशी के कुशल दिशा-निर्देश में विद्यार्थी अनुवाद में कार्यरत हैं -

"छात्रों ने मारिया नेज्यैशी के निर्देशन में भीष्म साहनी की अनेक कहानियों का हिंदी से हंगेरियन में अनुवाद-कार्य किया। ... ग्रीष्मावकाश के दौरान भी कुछ छात्रों ने हिंदी के अन्य लेखकों की कुछ प्रसिद्ध कहानियों का अनुवाद किया।"

इज़राइल के हिब्रु विश्वविद्यालय के व्याख्याता डॉ. गेनादी श्लोम्पर का कहना है -

"विद्यार्थियों को इस स्तर पर तैयार किया जाता है कि वे रामधारी सिंह दिनकर जैसे लेखक की रचनाएँ पढ़ सकें। कोश और व्याकरण की सहायता से वे अनुवाद करते हैं और जहाँ कठिनाई होती है, मैं उनकी मदद करता हूँ।"

हिंदी साहित्य के उन्नयन में अनुवाद की भूमिका निर्णायक है। यद्यपि साहित्यिक अनुवाद एक जटिल प्रक्रिया है, तथापि यह संतोषजनक है कि हिंदी की श्रेष्ठ गद्य और पद्य रचनाओं का अनुवाद विदेशियों द्वारा अपनी मातृभाषा में अविरल गति से हो रहा है। हिंदी वैश्विक भाषा के रूप में उभर रही है। वैश्विक दृष्टि से हिंदी साहित्य का अनुवाद करने के लिए विदेशी अनुवादकों को उचित प्रोत्साहन देना आवश्यक है। ऐसी आशा है कि विश्व भर में हिंदी साहित्य के विश्वसनीय अनुवादकों की संख्या बढ़ती रहे और विदेशी भाषाओं में हिंदी साहित्य का सटीक और प्रभावी अनुवाद होता रहे।

डॉ. माधुरी रामधारी
महासचिव